₹15/-

वर्ष 43 ★ अंक 4 ★ अप्रैल 2016

हँसती दुनिया

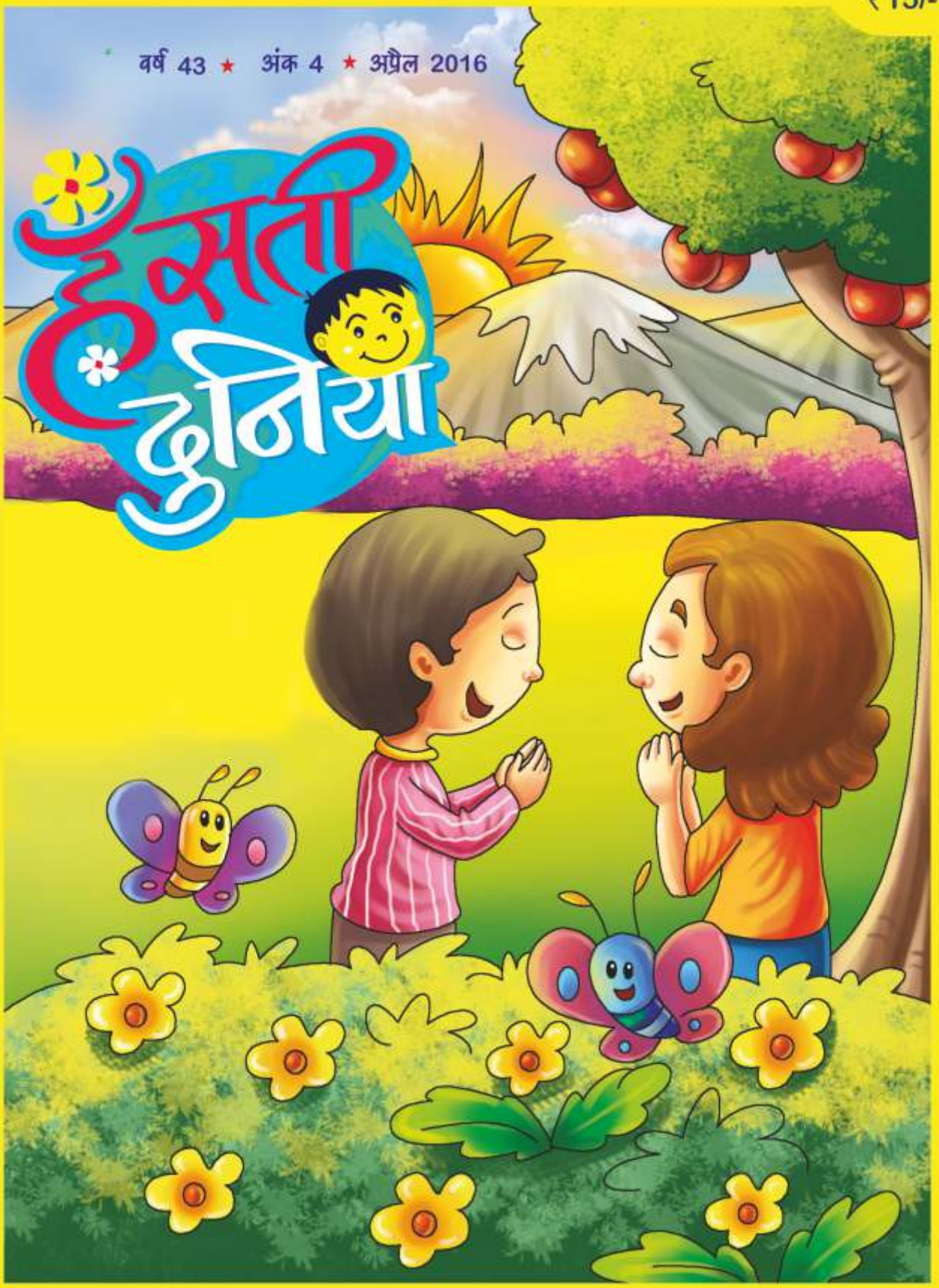

हँसती दुनिया

• वर्ष 43 • अंक 4 • अप्रैल 2016 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य संपादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4 सबसे पहले
5 सम्पूर्ण अवतार बाणी
7 अनमोल वचन
11 समाचार
20 वर्ग पहेली
30 कभी न भूलो
38 क्या आप जानते हैं?
44 पढ़ो और हँसो
46 जन्म दिन मुबारक
48 रंग भरो परिणाम

चित्रकथाएं

12 दादा जी
34 किट्टी

कहानियां

8. राहगीर प्यासा लौटा.....
: मदन देवड़ा
9. अन्न का आदर करें
: जैकी दुल्हानी
17. दूसरे का भरोसा मत करो
: गौरी शंकर कुमार
18. बुलन्दी
: सीताराम गुप्ता
24. वट बीज
: अंकुश्री
25. हमारी घड़ी
: राधेलाल 'नवचक्र'

कविताएं

6. पुस्तक मेला
: डॉ. परशुराम शुक्ल
10. झूठ न बोलो
: घमण्डी लाल अग्रवाल
19. जीवन क्या है?
: नेहा नागपाल
22 प्रार्थना
: गफूर स्नेही
23. पौधे
: गफूर स्नेही
23. मछली रानी
: संदीप कुमार
29. दो बाल कविताएं
: हरजीत निषाद
33. चिड़िया
: मीनू सिंह

विशेष / लेख

16. पहेलियां
: निष्ठा आनन्द
20. छिपकली
: किशोर डैनियल
21. आंसू भी कीमती हैं
: अर्चना सोगानी
31. बहुत चालाक पक्षी है– 'तोता'
: शिवचरण चौहान
39. कीट–पंतगों की अजीब जीवनचर्या
: गोपाल जी गुप्त
43. कुदरत ही बनाती है मनमोहक घाटियां
: ईलू रानी
47. छपाई की विकास यात्रा
: जयेन्द्र

सबसे पहले

मानव उद्देश्य

मानव अपने स्कूल का होनहार विद्यार्थी है। पिछले पांच वर्षों से लगातार वह परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करता आ रहा है। उसको सभी अध्यापक भी चाहने लगे हैं। अब मानव को यह बात ज्ञात है कि सभी अध्यापक उसकी हर बात को सुनते भी हैं और उस पर विश्वास भी करते हैं। धीरे–धीरे वह अपनी हर बात शिक्षकों से मनवाने लगा और शिक्षकों को समझाने भी लग पड़ा। बाकी विद्यार्थियों में तो वह अपने–आपको शिक्षक से अधिक योग्य बताता और उनसे अनुचित व्यवहार भी करने लगता। अब उसका ध्यान दूसरों को समझाने और सुधारने में बीतने लगा। इस कारण वह अपनी शिक्षा पर कम ध्यान देने लगा। दूसरों को समझाने और सुधारने में वह इतना व्यस्त हो गया कि वह अपने उद्देश्य से भटकने लगा जिसका उसे एहसास भी नहीं रहा। अब उसका मान जिसको वह आत्म–सम्मान समझता था, वह अभिमान में बदल चुका था। यही अभिमान उसे दूसरों से प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या, द्वेष का कारण बनने लगा और यह उसके व्यवहार में भी दिखाई देने लगा। अर्थात् वह अपने नाम 'मानव' का अर्थ भी खोता जा रहा था।

प्यारे साथियों, यहाँ सोचने का विषय यह है कि मानव 'मानव' का अर्थ जानता है फिर भी वह मानव क्यों नहीं बन पाता? इसके पीछे ऐसा क्या कारण हो सकता है! आज सारे समाज में कुछ ऐसा ही हो रहा है, जिसको भी थोड़ी–सी प्रतिष्ठा या पद प्राप्त हो जाता है। वह अपने आपको दूसरों से उत्तम मानने लगता है। जबकि होना यह चाहिए कि जिसको भी पद या प्रतिष्ठा मिली है वह ऐसा उत्तम व्यवहार सभी से करे ताकि बाकी लोग उसे स्वयं ही अपने से उत्तम मानने लगें।

वह 'मानव' जो विद्यार्थी है वह भी इसी रोग से ग्रस्त होता चला गया क्योंकि उसके चारों ओर इसी तरह का वातावरण था। जहाँ ईर्ष्या, द्वेष, लालच को प्रतिस्पर्धा का नाम दिया जाता था। 'मानव' के साथ जो व्यवहार बचपन से हुआ और जो उसने देखा वह आज उसके आचरण में उतर चुका है, अन्ततः वह उसका स्वभाव बन गया। वह अपने स्वभाव से इतना मजबूर हो जाता है कि वह सही दिशा पर चल नहीं पाता क्योंकि उसको केवल वहीं अच्छा लगता है जिसे वह करता रहा है। परन्तु इस तरह की समस्या का समाधान हम सभी को मिलकर करना है। हर व्यक्ति चाहे वह सामान्य है या सम्पन्न, दुर्बल या शक्तिशाली, पढ़ा–लिखा या अनपढ़ हो सभी को अपना आचरण और व्यवहार मानव की तरह करना होगा, जिसमें तृष्णा, लालच, अहंकार की कोई जगह नहीं होगी।

इसी तरह मानवता को विकसित करने, मानव को मानव से जोड़ने का प्रयत्न हर वर्ष 24 अप्रैल को होता है जिसको 'मानव एकता दिवस' के नाम से जाना जाता है क्योंकि इस दिन (24 अप्रैल,1980) सद्गुरु बाबा गुरबचन सिंह जी ने मानवता की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया।

उसी दिन से आज तक मानव से मानवता का प्रवाह होता रहे, के उद्देश्य की पूर्ति को सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी लगातार करते आ रहे हैं। जिन्होंने भी मानव को सही अर्थों में मानव बनाने का प्रयास किया और जो कर रहे हैं, उनको हमारे हँसती दुनिया परिवार का शत–शत नमन।

"मानव का मानव बनकर रहना ही मानव का एक मात्र उद्देश्य है।"

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 131

माया दे विच ग़ाफ़ल बन्दे हीरा जनम गवावें तूं।
सभ हराम है नाम दे बाझों जो वी पीवें खावें तूं।
दुष्टां नाल प्यार है तेरा सन्तां ताईं सतावें तूं।
सारे नर्क तूं मनमुख भोगें अपणा कीता पावें तूं।
बाझ गुरु नहीं मुक्ति मिलदी लख पेआ कर्म कमावें तूं।
जम जम मरें मरें ते जम्में रोवें ते कुरलावें तूं।
महापुरषां दी इक न मन्नें अन्त समें पछतावें तूं।
करमां धरमां वाले फन्दे गल दे विच लटकावें तूं।
कुझ नहीं गेआ अजे वी वेला शरन गुरु दी आणे दा।
कहे अवतार सुणो रे भाई साध संगत तर जाणे दा।

भावार्थ :

उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि इन्सान सतर्क नहीं है। यह असावधानी के कारण माया में फंसकर रह गया है और अपना हीरे जैसा कीमती जन्म व्यर्थ में गंवा रहा है। नाम के बिना इसका खाना–पीना सब व्यर्थ (हराम) है क्योंकि जिस मालिक की कृपा से यह खा–पी रहा है ये न तो इसे जानता है और न ही इसका शुकराना (शुक्र) करता है।

दुष्टों के साथ इसका प्यार है और सन्तों को सताने में इसे आनन्द आता है। इसका मुख अपने मन की ओर है और यह मनमुख घोर नर्क भोगता हुआ अपने कर्मों का फल पा रहा है। इन्सान को पता ही नहीं है कि लाखों कर्म कमाने से भी सद्गुरु के बिना इसे मुक्ति नहीं मिल सकती। रोता–चीखता हुआ यह जन्म लेता है, मरता है। ये बार–बार जन्म लेता और मरता रहता है।

महापुरुष इसे जन्म–मरण के इस घोर नर्क से छुड़ाना चाहते हैं लेकिन यह महापुरुषों की एक नहीं मानता फलस्वरूप अन्त में पछताता है। इन्सान ने खुद ही कर्म–धर्म का फन्दा अपने गले में फंसा लिया है।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि इन्सान अब भी तेरा कुछ नहीं बिगड़ा है, अभी भी समय है, तू सद्गुरु की शरण में आ जा। यह बात सभी ध्यान से सुनो कि साधु का संग ही भवसागर से तरने का एक मात्र उपाय है इसलिए समय रहते यह कार्य अवश्य कर लो।

विश्व पुस्तक दिवस (23 अप्रैल) पर विशेष

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

पुस्तक मेला

पापा पापा चलो घूमने,
दिल्ली पुस्तक मेला।
दुनिया भर की पुस्तक वाला,
यह मेला अलबेला।

पापाजी तैयार हो गये,
सुन कर बात हमारी।
अगले दिन हमने कर डाली,
चलने की तैयारी।

लेकर टिकट रेल का हम सब,
बच्चे दिल्ली आये।
साथ पुस्तकें ले जाने को,
थैले भी संग लाये।

देश–देश की सजी पुस्तकें,
और भीड़ थी भारी।
इस विशाल मेले ने खोलीं,
आँखें बंद हमारी।

हिन्दू, उर्दू, अंग्रेजी के,
साथ कई भाषाएँ।
लगीं पुस्तकें इतनी ज्यादा,
देख नहीं हम पाएँ।

गीत ग़ज़ल से विश्वकोश तक,
खींचे ध्यान हमारा।
कितना लिखता पढ़ता ये जग?
सोचे बिट्टू प्यारा।

तीन दिनों में देख सके हम,
लगी पुस्तकें सारी।
और खरीदी में चौथे दिन,
खाली जेब हमारी।

थैले भरे पुस्तकों से थे,
बोझ हो रहा भारी।
मन करता था और खरीदें,
लेकिन थी लाचारी।

लेकर अपने–अपने थैले,
हम सब वापस आये।
जो सुख मिला पुस्तकें लेकर,
अनपढ़ समझ न पाये।

ज्ञान भरा है इनमें कितना,
हम कैसे पहचानें?
इनको पढ़ने से क्या मिलता?
पढ़ने पर ही जानें।

बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज द्वारा कहे गये पावन वचन

★ सुपुत्र (गुरसिख) वही जो पिता (सद्गुरु) की आज्ञा माने अन्यथा भले ही वह कितना ही योग्य क्यों न हो पिता (सद्गुरु) को प्यारा नहीं होता।

★ मां अपने बच्चे द्वारा फैलाई जा रही गन्दगी पर ध्यान न देकर उसे साफ कर देती है। इसी तरह हमें भी किसी की बुराइयों और अवगुणों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

★ हमें अपनी कथनी और करनी में समानता लानी है क्योंकि जिनकी कथनी करनी एक होती है वही सच्चे महात्मा हुआ करते हैं।

★ अगर हम में किसी को पानी पिलाने की शक्ति है तो वह भी प्रेमपूर्वक और श्रद्धा से पिलाना है, आडम्बर को बिल्कुल महत्व नहीं देना।

★ हमारे अन्दर 'मैं कर्ता हूँ' यह भावना कभी भी नहीं आनी चाहिए।

★ हमने जो कुछ करना है शुद्ध हृदय से करना है तभी हम दुनिया में परिवर्तन ला सकेंगे।

★ इन्सान अगर सही है, इन्सानियत से भरपूर है, तो वह सभी धर्मों को अपना रहा है।

★ पहला उसूल है कि हमें अभिमान को त्यागना है। अभिमान में आकर लोग कई प्रकार की बुराईयां करते हैं।

★ तन–मन–धन परमात्मा को अर्पण करके इस्तेमाल करिए तभी ये सब कुछ आपके लिए शुभ होगा।

★ जो अपने मन से बुराई को दूर कर दे, अहंकार छोड़ दे वह एक मिनट में महात्मा बन सकता है।

★ जो भगवान को देखकर, अंग–संग जानकर कर्म करता है वह दुनिया की तकदीर बदल सकता है।

★ हमने हमेशा चेतन रहना है। बुराइयों से बचना है और भक्तों वाला जीवन जीना है।

★ दिखावे की सेवा लाभदायक नहीं होती। जितनी भी सेवा की जाए, दिल से की जाए।

★ सोच–समझकर व्यवहार करो। न किसी को धोखा दो, न किसी से धोखा खाओ।

★ आनन्द वो ही प्राप्त करता है, जो अपने मन को इस सत्य के साथ जोड़े रखता है।

★ परमात्मा से गिला–शिकवा नहीं करना चाहिए। अगर हमारे पैर में जूता नहीं है तो क्या हुआ पैर तो हैं। यदि यह भी न होते तो हम क्या कर लेते।

★ चरणों में झुकना ही सबसे बड़ी भक्ति है। सभी धर्म–ग्रन्थों में चरणों की वन्दना को महान बताया गया है।

– प्रस्तुति : हरजीत निषाद

लघु कथा : मदन देवड़ा

राहगीर प्यासा लौटा...

एक गाँव था। उसमें बसे सब लोग मूर्ख थे। इसलिए उस गाँव को मूर्खों का गाँव कहा जाता था।

एक दिन एक राहगीर उस गाँव से होकर गुजर रहा था। उसे प्यास लग रही थी। गाँव के पास ही कुआं था, वहाँ पर एक व्यक्ति स्नान कर रहा था।

राहगीर पानी पीने के लिए वहाँ आया और उस व्यक्ति से बोला– भईया! प्यासा हूँ। पानी पिला दो।

उस व्यक्ति ने अपनी बाल्टी मांजी– धोयी और पानी निकालने के लिए कुएं में डाली।

पानी भरी बाल्टी जब वह खींच रहा था तभी राहगीर ने पूछा– भैया, यह वही गाँव है न! जो मूर्खों के गाँव के नाम से मशहूर है।

उस व्यक्ति को गुस्सा आ गया। उसके स्वाभिमान को ठेस जो लगी थी। रस्सी छोड़कर हाथों को नचाते हुए बोला–

किसी जमाने में बसते थे मूर्ख!

अब यहाँ कोई मूर्ख नहीं है।

सच–सच कहता हूँ तुमसे।

मेरी बात बिल्कुल सही है।

जब राहगीर ने यह सब देखा–सुना तो हँस–हँस कर लोट–पोट हो गया और फिर उसे 'प्यासा' ही कुएं से लौटना पड़ा। •

प्रेरक–प्रसंग : जैकी दुल्हानी

अन्न का आदर करें

सम्राट विक्रमादित्य अपने लाव–लश्कर के साथ एक बार कहीं जा रहे थे। सवारी जब धान मण्डी से गुजर रही थी। तभी सम्राट ने देखा कि जमीन पर अनाज के दानें बिखरे पड़े हैं। देखकर वे हाथी से उतर गये और खुश होकर बोले– वाह! जमीन पर इतने सारे हीरे बिखरे पड़े हुए हैं। यह कहकर वे अनाज के दानों को अपने हाथों से बिनने लगे। उन्हें ऐसा करते देखकर मंत्री और अन्य सभी लोग भी बिखरे हुए उस अनाज को बटोरने लगे। देखते ही देखते अनाज के उन दानों से सम्राट और अन्य की झोली भर गई। फिर सबको सम्बोधित करते हुए वे बोले– हमारे राज्य में अनाज की कमी का एक बड़ा कारण हमारा उसकी बर्बादी तथा अनादर है। कम से कम आठ–दस लोगों का पेट तो इससे भर ही जायेगा जबकि हम इसे अपने पैरों तले रौंद रहे थे।

कहते हैं सम्राट विक्रमादित्य के शासन काल में हमारे देश में अनाज की कमी नहीं रही।

आइए! प्रण करें कि हम किसी भी खाद्यान्न की बर्बादी और अपव्यय न करें ताकि हमारे भंडार भरे रहें और हम खुशहाल जिन्दगी जी सकें।

बालगीत : घमंडीलाल अग्रवाल

झूठ न बोलो

झूठ बोलना बात बुरी है–
झूठ न बोलो झूठ।

झूठ बोल चाहे शिक्षक से
पड़ें न तुमको डंड़े,
लेकिन एक दिवस तो उखड़ें
गड़े झूठ के झंडे।

झूठ बोलने वालों से तो–
किस्मत जाती रूठ।

मुख काला हो सदा झूठ का
हम यह सुनते आए,
जो बोले हैं झूठ हमेशा
मन ही मन घबराए।

सच अपना कर इस जीवन में–
लूट मजे लो लूट।

देखो सच का पाठ सीख लो
हरिचन्द्र राजा से,
तिलक, लक्ष्मीबाई, राणा
या गाँधी बाबा से।

प्राण भले ही छूटे उनके–
नहीं सका सच छूट।

झूठ और सच में जब जमकर
होती कभी लड़ाई,
बलशाली रावण से पूछो
विजय किसे मिल पाई।

झूठ दवाई मीठी मीठी–
सच ज्यों कड़वा घूंट।

समाचार

ब्लैक होल ने तारा निगलकर मलबा फेंका

वॉशिंगटन। खगोलविदों के लिए ब्लैक होल और इससे जुड़ी घटनाएं हमेशा से ही गहन जिज्ञासा का विषय रहीं हैं। इस बार वैज्ञानिकों ने ब्लैक होल से जुड़ी हुई एक ऐसाी घटना को देखा है जिसे लेकर अब तक काफी भ्रांतियां रहीं हैं। वैज्ञानिकों ने अंतरिक्ष में ब्लैक होल को एक तारे का अस्तित्व समाप्त करते और उसका मलबा अंतरिक्ष में धकेले जाने की एक अद्वितीय घटना को देखा है।

यूं तो खगोलविद पहले भी कई बार तारों का अस्तित्व समाप्त होने की घटनाओं के गवाह बने हैं लेकिन यह पहला मौका है जब वैज्ञानिकों ने इस पूरी प्रक्रिया के दौरान कुछ ऐसी चीजों को देखने का दावा किया जिसको लेकर अभी तक काफी भ्रांतियां बनी हुई थीं।

'वॉशिंगटन पोस्ट' की एक रिपोर्ट के अनुसार ब्लैक होल को एक तारे का अस्तित्व समाप्त करने की इस प्रक्रिया में पहली बार तारे के बचे मलबे को ब्लैक होल द्वारा अंतरिक्ष में फेंके जाने की प्रक्रिया को भी पकड़ा है। अनुसंधानकर्ताओं का कहना है कि यह पहला मौका है ब्लैक होल के तारे का अस्तित्व खत्म करते देखे जाने के साथ उसका मलबा अंतरिक्ष में उछाले जाने की घटना को भी देखा गया है। पहली बार बाहर फेंके गए मलबे से निकले रेडियो संकेतों को पकड़ा गया है।

वैज्ञानिकों के अनुसार किसी तारे को इस तरह फाड़कर अंतरिक्ष में उछाले जाने की यह घटना अभी तक रहस्यमय बनी हुई थी। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के अनुसार जब कोई तारा किसी ब्लैक होल के नजदीक आ जाता है तो ब्लैक होल से निकलने वाला जबरदस्त चक्रवाती बल तारे को फाड़कर रख देता है और तारे का मलबा बाहर की ओर उछाल दिया जाता है, बाकी बचा भाग ब्लैक होल निगल जाता है।

'जॉन हाप्किंस विश्वविद्यालय' के जोएर्ट वाल वेलजन ने बताया, 'अंतरिक्ष में होने वाली जिस घटना को देखा गया है वह दुर्लभ है। यह पहला मौका है जब किसी ब्लैक होल द्वारा तारे को निगलते देखते हुए और तारे के बचे हुए मलबे को एक फनल के आकार में बाहर फेंकते हुए भी देखा गया है। नासा के अनुसार ब्लैक होल से जुड़ी इस घटना को देखा जाना यूं तो काफी दुर्लभ है ही लेकिन ब्लैक होल के बारे में अब भी काफी कुछ पता लगाना बाकी है। (वार्ता)

–संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

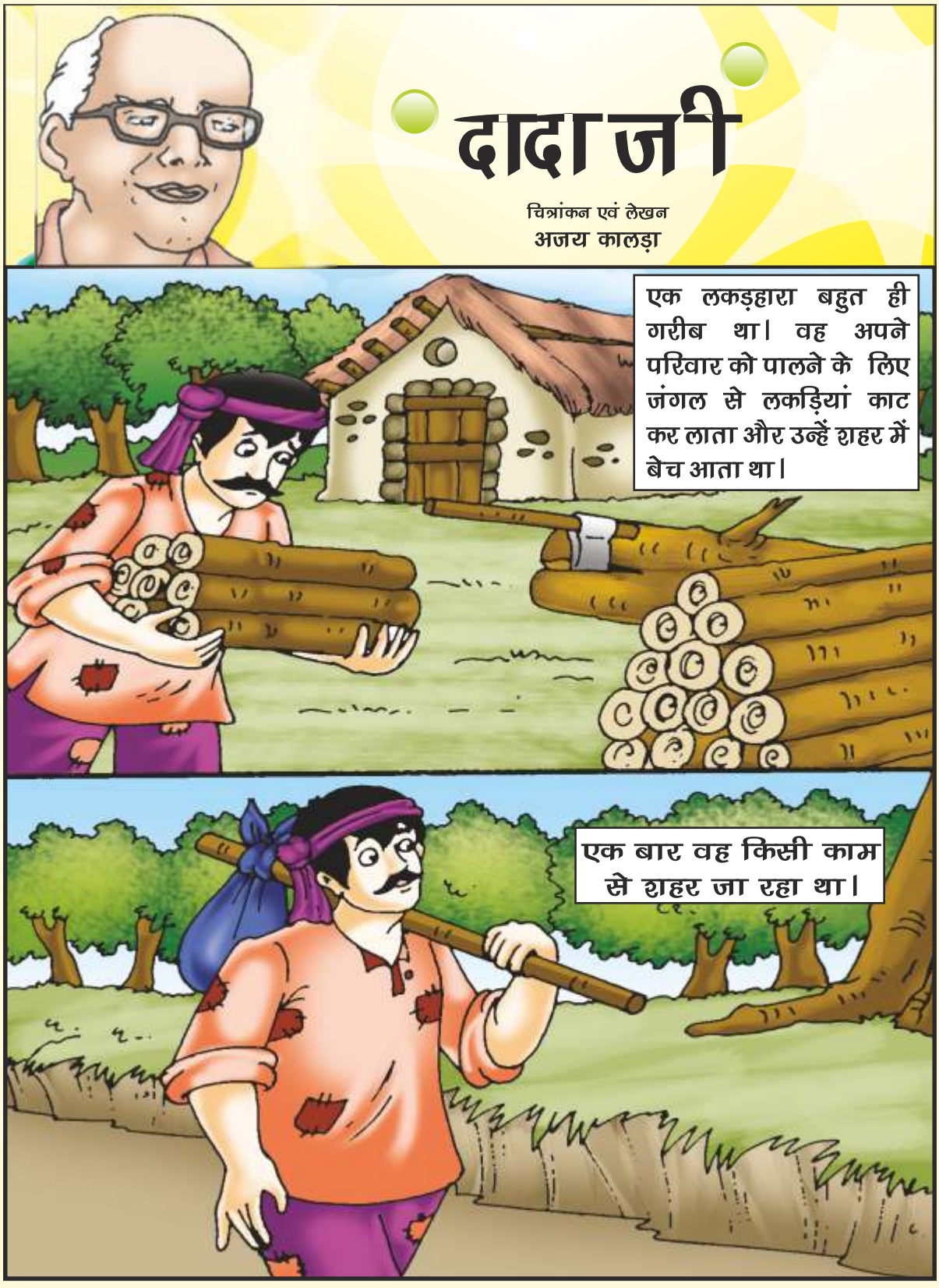
दादाजी
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
एक लकड़हारा बहुत ही गरीब था। वह अपने परिवार को पालने के लिए जंगल से लकड़ियां काट कर लाता और उन्हें शहर में बेच आता था।
एक बार वह किसी काम से शहर जा रहा था।

शहर में लकड़हारे की नज़र एक मिठाई की दुकान पर पड़ी और वह वहीं रूक गया।
लकड़हारे के पास मिठाई खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। इसलिए वह मिठाई की खुशबू का आनन्द लेने लगा।
लकड़हारा जैसे ही जाने के लिए मुड़ा तभी पीछे से एक आवाज़ आई।
"रूको!" दुकानदार ज़ोर से चिल्लाया।

दुकानदार ने उसे मिठाई की खुशबू का आनन्द उठाने के बदले में पैसे देने को कहा।
लकड़हारा यह सुन कर बहुत ही हैरान हुआ।
लकड़हारे ने समझदारी दिखाते हुए अपनी ज़ेब से कुछ सिक्के निकाले।
फिर उसने दुकानदार के सामने उन्हें हवा में उछाला।

और सिक्कों को वापिस अपनी जेब में रख लिया।

लकड़हारे ने कहा, "मैंने तुम्हें खुश्बू का मोल चुका दिया है।"

दुकानदार ने कहा, "परन्तु तुमने तो सिर्फ सिक्के खनकाएं हैं।"

"जैसे मैंने मिठाई की खुश्बू का आनन्द लिया है,

वैसे ही तुम भी सिक्कों की खनखनाहट का आनन्द ले चुके हो।" लकड़हारे ने जवाब दिया।

दुकानदार यह सुनकर चकित रह गया और समझदार लकड़हारा हँसता हुआ आगे चल पड़ा।

पहेलियां

प्रस्तुति : निष्ठा आनन्द (लुधियाना)

1. हरी–हरी मछली के,
हरे हरे अण्डे।
जल्दी से नाम बताओ,
नहीं तो पड़ेंगे डण्डे।।

2. निखट्टू बैठे रहते,
बस चुप रहते देखा करते।
जब चांटे कान पर पड़ते जाते,
शोर मचाते और हल्ला करते।।

3. मांस नहीं हाड़ नहीं,
सिर्फ उंगलियां मोरी।
नाम बताओ मुन्ने राजा,
अक्ल देखूं तोरी।।

4. नारी एक अनोखी देखी,
कान में पहनें बाला।
हलवा पूरी हमें खिलाती,
बताओ तो तुम लाला।।

5. तुम न बुलाओ मैं आ जाऊंगी,
न भाड़ा न किराया दूंगी,
घर के हर कमरे में रहूंगी,
पकड़ न मुझको तुम पाओगे,
बताओ मैं कौन हूँ?

6. गर्मी में तुम मुझको खाते,
मुझको पीना हरदम चाहते।
मुझसे प्यार बहुत करते हो,
पर भाप बनूँ तो डरते हो।।

7. मुझमें भार सदा ही रहता,
जगह घेरना मुझको आता।
हर वस्तु से गहरा रिश्ता,
हर जगह मैं पाया जाता।।

8. ऊपर से नीचे बहता हूँ,
हर बर्तन को अपनाता हूँ।
देखो मुझको गिरा ना देना,
वरना कठिन हो जाएगा भरना।।

9. लोहा खींचू ऐसी ताकत है,
पर रबड़ मुझे हराता है।
खोई सूई मैं पा लेता हूँ,
मेरा खेल निराला है।।

10. अनपढ़ से ना करती बात,
रखती सीने अपने ज्ञान।
पायी जाती सभी जगह,
साक्षर मेरा करते गुणगान।।

(पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

बाल कथा : गौरी शंकर कुमार

दूसरे का भरोसा मत करो

एक किसान के पास एक गाय और एक घोड़ा था। वे दोनों एक साथ जंगल में चरते थे। किसान के पड़ोस में एक धोबी रहता था। धोबी के पास एक गधा और एक बकरी थी। धोबी भी उन्हें उसी जंगल में चराने ले जाता था। एक साथ चरने से चारों पशुओं की दोस्ती हो गयी। वे साथ ही जंगल में आते और शाम को एक साथ जंगल में चले जाते थे।

उस जंगल में एक खरगोश भी रहता था। खरगोश ने चारों पशुओं की मित्रता देखी तो सोचने लगा– 'मेरी भी इनसे मित्रता हो जाये तो बड़ा अच्छा हो। इतने बड़े पशुओं से मित्रता होने पर कोई कुत्ता मुझे तंग नहीं करेगा।'

खरगोश उन चारों के पास बार–बार आने लगा। वह उनके सामने उछलता, कूदता और उनके साथ ही चरता था। धीरे–धीरे चारों के साथ उसकी मित्रता हो गयी। अब खरगोश बड़ा खुश हुआ। उसने समझा कि कुत्तों का भय दूर हो गया।

एक दिन एक कुत्ता उस जंगल में आया और खरगोश के पीछे दौड़ा। खरगोश भागा–भागा गाय के पास गया और बोला– 'गोमाता! यह कुत्ता बहुत दुष्ट है। यह मुझे मारने आया है। तुम इसे अपने सींगों से मारो।'

→

प्रेरक–प्रसंग : सीताराम गुप्ता

बुलंदी

एक बार उक़ाब जब उड़ने लगा तो एक मकड़ी उसके पैरों से चिपक गई और वह भी उक़ाब के साथ–साथ पहाड़ की चोटी तक जा पहुँची। वहाँ पहुँचकर वह उक़ाब के पैरों को छोड़कर दूर एक चट्टान पर जा बैठी और कहने लगी ''देखो मैं कितनी ऊँचाई पर पहुँच गई हूँ?''

इतने में हवा का एक तेज झोंका आया। उक़ाब बड़े मज़े से वहाँ बैठा रहा पर मकड़ी एक ही झटके में चट्टान से गिरकर हवा में उड़ते हुए वापस ज़मीन पर जा पहुँची।

मकड़ी की तरह जो लोग बिना अपनी योग्यता और सामर्थ्य के किसी के सहारे ऊँचाई पर पहुँच जाते हैं परन्तु एक हल्के से आघात से ही वे फौरन नीचे आ जाते हैं। बुलंदी पर पहुँचना तो आसान है लेकिन वहाँ ठहरे रहना मुश्किल है। ऊँचाई पर केवल वही लोग टिक पाते हैं जो अपनी योग्यता और मेहनत से मुकाम हासिल करते हैं।

→ गाय ने कहा– 'भाई खरगोश! तुम बहुत देरी से आये। मेरे घर लौटने का समय हो गया है। मेरा बछड़ा भूखा होगा और बार–बार मुझे पुकारता होगा। मुझे घर जाने की जल्दी है। तुम घोड़े के पास जाओ।'

खरगोश दौड़ता हुआ घोड़े के पास गया और बोला– 'भाई घोड़े! मैं तुम्हारा मित्र हूँ। हम दोनों साथ ही यहाँ चरते हैं। आज यह दुष्ट कुत्ता मेरे पीछे पड़ा है। तुम मुझे पीठ पर बैठाकर दूर ले चलो।'

घोड़े ने कहा– 'तुम्हारी बात तो ठीक है, किंतु मुझे बैठना आता नहीं। मैं तो खड़े–खड़े सोता हूँ। तुम मेरी पीठ पर चढ़ोगे कैसे? आजकल मेरे खुर बढ़ गये हैं। मैं न तो दौड़ सकता हूँ और न पैर फटकार सकता हूँ।'

घोड़े के पास से निराश होकर खरगोश गधे के पास गया। उसने गधे से कहा–'मित्र गधे! तुम इस पापी कुत्ते पर एक दुलत्ती झाड़ दो तो मेरे प्राण बच जायें।'

गधा बोला– 'मैं नित्य गाय और घोड़े के साथ घर लौटता हूँ। वे दोनों जा रहे हैं। यदि मैं उनके साथ न जाकर पीछे रह जाऊँ तो मेरा स्वामी धोबी डंडा लेकर दौड़ा आयेगा और पीटते–पीटते मेरा कचूमर निकाल देगा। मैं अब यहाँ ठहर नहीं सकता।'

अन्त में खरगोश बकरी के पास गया। बकरी ने उसे देखते ही कहा– 'खरगोश भाई! कृपा करके इधर मत आओ। तुम्हारे पीछे कुत्ता दौड़ता आ रहा है। मैं उससे बहुत डरती हूँ।'

अब खरगोश ने सोचा– 'मुझे अपनी बुद्धि, आत्मबल और योग्यता पर विश्वास करना चाहिए।'

सब ओर से निराश होकर खरगोश वहाँ से भागा। भागते–भागते वह जाकर एक झाड़ी में छिप गया। कुत्ते ने बहुत ढूंढ़ा किंतु उसे खरगोश का पता नहीं चला।

जीवन क्या है?

कविता :
नेहा नागपाल

जीवन एक कर्त्तव्य है–
इसे पूरी निष्ठा से पूरा कीजिए।
जीवन एक चुनौती है–
उसका सामना कीजिए।
जीवन एक सफर है–
उसे पूरा कीजिए।
जीवन एक वरदान है–
उसे स्वीकार कीजिए।
जीवन एक खेल है–
उसे खेलिए।
जीवन एक संगीत है–
उसे गाइये।
जीवन एक अनुपम है–
उसकी महिमा गाइये।
जीवन एक प्रण है–
उसका पालन कीजिए।
जीवन एक रहस्य है–
उसे ढूंढ़िये।
जीवन एक अवसर है–
उसका सदुपयोग कीजिए।

जीवन एक कथा है–
उसे सुनिये।
जीवन एक संघर्ष है–
उससे द्वन्द कीजिये।
जीवन एक अनुराग है–
उसे अनुभव कीजिये।
जीवन एक आत्मा है–
उसका बोध कीजिये।
जीवन एक कटु सत्य है–
उससे संघर्ष कीजिये।
जीवन एक पुष्प है–
खुशबू बिखेरिये।
जीवन एक सागर है–
पार कीजिये।
जीवन एक दीप है–
उसे जलाये रखिये।
जीवन एक वादा है–
उसे निभाइये।
जीवन एक पहेली है–
उसे बूझिये।

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा

वर्ग पहेली

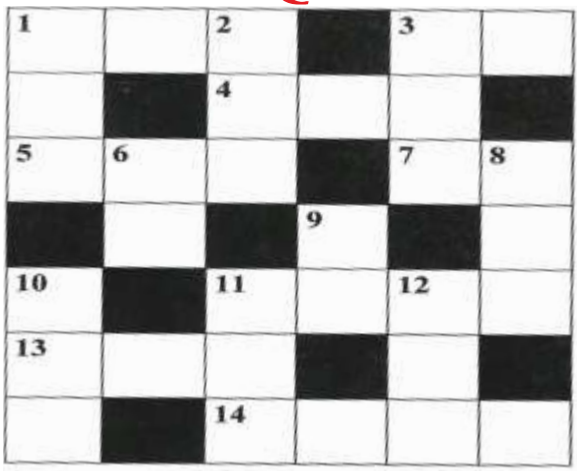

बाएं से दाएं →

1. भारत की एकमात्र महिला प्रधानमंत्री का नाम ..... गाँधी था।
3. भारत में कितने केन्द्र शासित प्रदेश हैं?
4. ..... देश की मुद्रा जमैका डालर है।
5. जान है तो ..... है।
7. भारत की पहली महिला मुख्य निर्वाचन आयुक्त वी. एस. ..... देवी थीं।
11. गाँव की पंचायत का मुखिया।
13. बीजिंग और त्रिपोली में से जो शहर अफ्रीका महाद्वीप में है।
14. सन्धि कीजिए– मनः + बल।

ऊपर से नीचे ↓

1. वेस्ट ..... की क्रिकेट टीम ने पहली बार पुरुषों का आई.सी.सी. ट्वेंटी– 20 विश्वकप 2012 में जीता।
2. बेमेल शब्द छांटिए : राजन, कमल, पंकज, राजीव।
3. निराकार का विपरीत शब्द।
6. ध्यानचंद किस खेल के महान खिलाड़ी थे?
8. सोने का हिरण बनकर सीता के अपहरण में रावण की सहायता करने वाला राक्षस।
9. जंगल का राजा।
10. शुद्ध शब्द छांटिए : छत्रिय/क्षत्रिय।
11. मुगल सम्राट अकबर के पुत्र का नाम।
12. भारत का सबसे ऊँचा भाखड़ा बांध ..... राज्य में है।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)

जानकारी : किशोर डैनियल

छिपकली

बच्चों! क्या आपको मालूम है कि संसार में 3000 से भी अधिक अलग–अलग किस्म की छिपकलियां पाई जाती हैं। ये ऐसे स्थानों पर पाई जाती हैं जहाँ ठण्ड नहीं होती परन्तु कई बार दलदल में, चारागाह, जंगल, घरों और इमारतों में भी पाई जाती हैं। अधिकतर छिपकलियां हानिरहित होती हैं। फसल को नुकसान पहुँचाने वाले छोटे कीड़े–मकोड़ों को खाकर ये किसानों की सहायता भी करती हैं।

कुछ आश्चर्यजनक छिपकलियों में से विपटेल छिपकलियां प्रसिद्ध हैं। जितनी उनके शरीर की लम्बाई होती है, उससे आधी उनकी पूँछ की लम्बाई होती है, जिसे वे बालू पर दौड़ने के लिये प्रयोग करती हैं। नर छिपकलियां गहरे भूरे रंग के होते हैं और उनके शरीर पर सुनहरी धारियां होती हैं।

एक और बारकिंग गिको नामक छिपकलियों की जाति हैं, जो रेगिस्तानी क्षेत्रों में पाई जाती है। गर्मी के दिनों में ये बालू में बिल बनाकर रेगिस्तान की गर्मी से अपना बचाव करती हैं। इनका भोजन बीज या रेगिस्तानी हवा के द्वारा उड़कर आये छोटे पौधे या दूसरी भोजन सामग्री होती है।

जहाँ ये छोटे प्राणी रहते हैं वहाँ पानी नहीं होता परन्तु परमात्मा में इसका विशेष प्रबंध कर रखा है। रात को ओस बूंदें पानी में परिवर्तित हो इनके शरीर पर ठहर जाती है। इन बूंदों को चाटकर ही ये अपनी पानी की आवश्यकता को पूरा करते हैं।

आलेख : अर्चना सोगानी

आंसू भी कीमती हैं

कुदरत के हसीन नजारे हमें आँखों की बदौलत ही दिखाई देते हैं। यह सच है, हमारी आँखें अनमोल हैं लेकिन आपको जानकर अचरज होगा कि हमारी आँखों के आंसू भी बहुत कीमती हैं। अब इन्हें भी बचाकर रखना होगा, क्योंकि इनकी कमी से 'ड्राइनेस' की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

अमेरिका के डॉक्टरों एवं वैज्ञानिकों के अनुसार बढ़ते हुए प्रदूषण ने अब लोगों की आँखों को भी शिकार बनाना शुरू कर दिया है। प्रदूषण के अलावा कम्प्यूटर, एयरकंडीशनर आदि के कारण भी आंसुओं के सूखने की समस्या तेजी से बढ़ती जा रही है।

प्रदूषण के कारण लोगों की आँखों में जलन, सनसनाहट, चुभन आदि की शिकायत आम है। कई लोगों को शाम को दफ्तर से घर लौटते समय रास्ते में ट्रेफिक जाम के कारण ऐसी समस्या का अधिक सामना करना पड़ता है।

उम्र बढ़ने, लम्बे समय तक दवाइयों के इस्तेमाल के कारण भी 'ड्राइनेस' की समस्या उत्पन्न हो जाती है। कुछ लोगों की आँखों में जन्मजाततौर पर भी कम आंसू आते हैं।

कई लोगों को महसूस होता है कि उनकी आँखों में रेत के कण पड़ गए हैं या कोई बाहरी चीज आँखों में चुभ रही है। किसी को खुजलाहट या जलन है तो किसी को रोशनी बर्दाश्त नहीं होती। किसी को पलकें भारी–भारी महसूस होती हैं, किसी की आँखें लाल हो जाती हैं या किसी की आँखों में दर्द महसूस होता है। ये सभी लक्षण आंसुओं के सूखने के हैं।

कई बार ऐसा भी होता है कि व्यक्ति की आँखों में या तो कम या नहीं के बराबर आंसू बनते हैं तो आँखें पर्याप्त रूप से गीली नहीं रह पाती। आँखों का गीला न होना ही 'ड्राइनेस' है। दरअसल पलक झपकने से आँखों में आंसू की एक परत टी आर फिल्म बनती है। यह आँखों को चिकना रखती है और धूल कण आदि से बचाती है।

पराग कणों से भी 'ड्राइनेस' की समस्या होती है और विटामिन 'ए' की कमी से भी यह समस्या पैदा हो सकती है। समय पर इसका इलाज न कराने से आँखों में घाव पैदा हो सकता है। जो अल्सर में बदलकर 'रेटीना' यानी आँखों के पर्दे को क्षतिग्रस्त कर सकता है, जिससे अंधता भी हो सकती है।

टेलीविजन देखने वालों और कम्प्यूटर पर काम करने वालों को भी 'ड्राइनेस' की शिकायत रहती है, क्योंकि टी.वी. तथा कम्प्यूटर स्क्रीन के सामने पलकें कम झपकती हैं जबकि हर 20 सेकण्ड़ पर पलकें जरूर झपकनी चाहिए।

एक विशेष लैंस की मदद से आंसुओं की परत की जांच की जाती है। इसके अलावा एक

→

बाल कविता : गफूर 'स्नेही'

प्रार्थना

ऐ मेरे मालिक मेरे ईश्वर,
मैं रहूं निर्भय अति निडर।

मुझको बुद्धि निर्मल दे,
मन जैसे खिला कमल।

डिगूं नहीं बाधाओं से,
डरूं नहीं उग्र हवाओं से।

तूफानों से न घबराऊं,
विपदाओं से पार पाऊं।

रहूं सदा मैं तेरा भक्त,
डरूं नहीं बना रहूं सख्त।

तेरे ही गुण गाऊं हरदम,
जीवन में अपनाऊं संयम।

विनम्र रहूं करूं याचना,
नित करूं मैं प्रार्थना।

विशेष रंगीन ड्राप डालकर यह पता लगाया जा सकता है कि आँखों के आंसू पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न हो रहे हैं या नहीं। इसके अलावा आँखों की पुतलियों के नीचे एक विशेष पेपर रखकर भी इसकी जांच की जा सकती है।

'ड्राइनेस' के लक्षण दिखाई देने पर मरीज को फौरन चिकित्सकों से सम्पर्क करना चाहिए। कम आंसुओं के कारण आँख में होने वाली जलन आदि से राहत के लिए कृत्रिम आंसू का इस्तेमाल किया जा सकता है, ये आँखों को गीला रखते हैं। ●●●

कविता : गफूर स्नेही

पौधे

पौधे लगाए वर्षा में,
बाग में जगह रहे न।
सब जगह नजर आए,
बाढ़ में बहे न।

दादाजी ने लगाए पेड़,
लेते सूखे से मुठभेड़।
हम भी उनमें जोड़े और,
रहे न कोई और छोर।

पीढ़ी दर पीढ़ी है,
यही तो जीवन की सीढ़ी है।
आओ हम गुलजार करें,
खड़ी एक बहार करें।

कविता : संदीप कपूर

मछली रानी

चांदी जैसी मछली रानी
जल से बाहर न आती हो,
मैं जो तुमको छूना चाहूं
डरकर क्यों चली जाती हो।

तुम कौन से खेल खेलती
क्या खाती क्या पीती हो,
एक जगह बोर नहीं हो
जल में कैसे जीती हो।

कभी खुशी में झूमकर
क्या तुम भी गीत गाती हो,
आज मुझे बता दो सब
इतना क्यों शरमाती हो।

बालकथा : अंकुश्री

वट बीज

वट वृक्ष की विशालता देखकर सुधीर चकित था। उसने अपने पिता से पूछा, "पिताजी, इतना बड़ा वृक्ष किसने बनाया है?"

सुधीर के पिता ने कहा, "इसे किसी ने बनाया नहीं है। हर पेड़–पौधों की तरह वट वृक्ष भी बीज से पैदा होता है।"

"बीज से!" पिताजी की बात सुनकर सुधीर को आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, "मटर और चना के बीज मैंने देखा है। क्या मटर और चना की तरह विशाल वट वृक्ष के भी बीज होते है?''

''हाँ! वट वृक्ष ही नहीं, हर पेड़–पौधा बीज से विकसित होता है।'' सुधीर के पिता ने उसे वट वृक्ष के बारे में समझाया और पूछा, "तुम यह तो समझ गये कि वट वृक्ष का बीज होता है। लेकिन बता सकते हो वह कितना बड़ा होता होगा?"

"कितना बड़ा होता होगा?" सुधीर ने अनुमान लगाते हुए कहा, "मटर और चना के बीज तथा उनके पौधे मैंने देखा है। इसलिये मैं वट बीज के आकार का अनुमान लगा सकता हूँ।

वह कम से हमारी गेंद जितना बड़ा तो होता ही होगा।"

"नहीं बेटा सुधीर।" सुधीर के पिता ने प्यार से कहा, "वट बीज मटर और चना से भी छोटा होता है, बहुत छोटा। वह सरसों से भी छोटा होता है।"

"अच्छा! ऐसी बात है?" सुधीर आँखें फाड़–फाड़ कर वट वृक्ष को देखने लगा। उसने पूछा, "लेकिन इतने छोटे बीज से इतना विशाल वृक्ष।"

सुधीर आश्चर्यचकित था। उसके पिता ने कहा, "विशाल वृक्ष के लिये यह जरूरी नहीं है कि उसका बीज भी विशाल हो। कोई पौधा छोटा होगा या विशाल, यह उसके बीज और वातावरण पर निर्भर है। वृक्ष ही क्यों, हर विशालता और महानता की यही कहानी है। जिस तरह कुछ विशाल वृक्ष हैं, उसी तरह कुछ महान पुरुष हुआ करते हैं। कोई भी बच्चा महापुरुष बन सकता है। हर बच्चा वट बीज की तरह है, जो भविष्य में वट वृक्ष बन सकता है।"

पिता की बातें सुनकर सुधीर बहुत खुश हुआ।

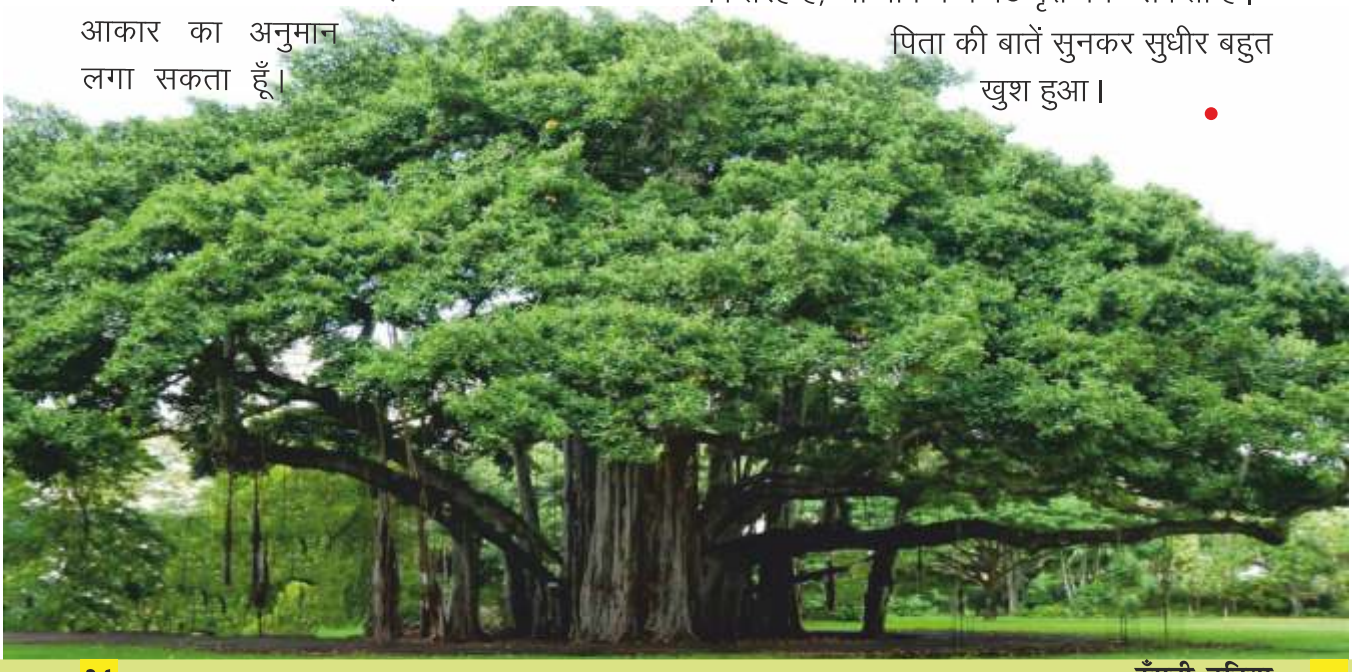

कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

हमारी घड़ी

आज सुबह–सवेरे दादा जी घर से बाहर निकल गये।

किसी को कुछ बताया भी नहीं। शायद किसी जरूरी काम से वह बाहर निकले थे। कब लौटेगें, यह कहना भी मुश्किल था।

चन्दन ने वन्दना से पूछा, ''कुछ खबर है, दादा जी कहाँ गए हैं?''

''नहीं तो!'' वन्दना अनमने भाव से बोली, ''बात क्या है?''

''अरी पगली, आज रविवार है।'' कहकर चन्दन ने एक धौस उसकी पीठ पर जमा दी।

''तो फिर?'' वन्दना अब भी कुछ नहीं समझी।

''नहीं समझी, दादा जी के कहानी सुनाने का दिन है न!''

''अरे हाँ,'' वन्दना चहक उठी।

तभी मधुलिका, अर्चना और मोनू भी वहाँ आ धमके। सभी को दादा जी की खोज थी। मगर दादा जी का कमरा बन्द था। ताला लगा था।

''फिर हम लोग ऐसा करें,'' मधुलिका ने अपनी बात रखी, ''अपनी पढ़ाई–लिखाई का कार्य पहले पूरा कर लें। जब दादा जी लौटकर आएंगे तो हम लोग उनसे कहानी सुनेंगे।''

''सही कहा,'' सबने बात मान ली।

अगले ही क्षण सभी बच्चे पढ़ने–लिखने बैठ गए। करीब तीन घंटे के बाद दादा जी लौटकर घर आए। अपना कमरा खोला। दीवार घड़ी, जो साथ लेकर आए थे, को यथास्थान रखा। फिर कुर्सी पर बैठकर आराम करने लगे।

बच्चों को दादा जी के आने की खबर मिल चुकी थी। वे पढ़ाई–लिखाई का काम पूरा कर चुके थे।

दोपहर की बेला में बच्चे दादा जी के कमरे में आ धमके। इस बीच दादा जी भी बच्चों को कहानी सुनाने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो चुके थे।

दादा जी ने बच्चों से कहा, ''सामने जो दीवार घड़ी देख रहे हो न! करीब एक सप्ताह से घड़ीसाज के पास पड़ी हुई थी। ठीक करने के लिए उसे दिया था।''

''घड़ी खराब हो गई थी क्या?'' बीच में मोनू टपक पड़ा।

''हाँ'' दादा जी ने आगे बताया, ''दुकान पर घड़ीसाज से कभी भेंट ही नहीं होती थी। उसका नौकर दुकान पर बैठा रहता। घड़ी के बिना मुझे हर काम में कठिनाई महसूस होती। आज रविवार है। सोचा दुकान बन्द होगी। अतएव पता लगाकर घड़ीसाज के घर पर जा पहुँचा। वह घर पर मिला। उसे लेकर उसकी दुकान पर गया। घड़ी ठीक करवायी। कुछ देर पहले मैं घड़ी लेकर घर लौटा हूँ। सुबह से यही चक्कर था।

सुबह–सवेरे से दादा जी के घर से गायब होने की बात अब बच्चे जान गए।

''अब तो आप कहानी सुनाएंगे न?'' मोनू ने सवालिया नजर दादा जी पर डाली।''

''जरूर,'' दादा जी बोले।

''आज किसी चीज की जन्मकथा सुनाएंगे?'' यह सवाल चन्दन ने पूछा।

''तुम्हीं लोग कहो,'' दादा जी बोले।

''अच्छा रहेगा, आज आप हम सबको घड़ी की ही जन्मकथा सुनाएं।'' मधुलिका ने अपनी बात रखी।

''हाँ, हाँ'' सब बच्चों ने भी हामी भर दी।

''अच्छी बात है,'' दादा जी मान गए,'' आज घड़ी की ही जन्मकथा तुम सब सुनो।''

''फिर सुनाइए,'' समवेत स्वर उभरा।

अच्छी तरह खांसकर गला साफ कर दादा जी ने कहानी कहनी शुरू की,'' जर्मनी में एक व्यक्ति हुआ था– लोहार पीटर हेनलीन। सन् 1500 ई. में उसने एक घड़ी बनायी। इस घड़ी को बनाने में हेनलेन को करीब दो साल तक कठिन मेहनत करनी पड़ी थी।

''मतलब कि लोहार पीटर हेनलेन दुनिया का पहला घड़ी निर्माता था!'' मुधलिका के मुख से निकल पड़ा।

''ऐसा ही है,'' दादा जी ने कहा,'' यह श्रेय हेनलीन को ही मिला।

''हेनलीन की घड़ी कैसी थी?'' चन्दन ने जानना चाहा।

''उसकी घड़ी ड्रम के आकार की थी, जो छह इंच ऊँची थी।'' दादा जी ने आगे बताया, ''यह घड़ी लोहे की बनी थी।''

''हाँ, तो!'' वन्दना ने हुंकारी दी।

''इस पहली घड़ी में सिर्फ एक सुई थी– घंटे वाली सुई। दादा जी कहते रहे, ''इसमें एक गड़बड़ी भी थी।''

''वह क्या?'' मधुलिका उत्सुक हो उठी।

''घंटे वाली सुई कभी एक घंटा आगे और कभी एक घंटा पीछे चला करती।'' दादा जी ने कहना जारी रखा। ''ऐसा सोचो कि हेनलीन ने घड़ी के नाम पर एक चीज तैयार की, लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा। समय की मोटी जानकारी इस घड़ी के द्वारा उसने हम लोगों को दी। शुरू की इस कोशिश को कम महत्वपूर्ण नहीं कहा जा सकता।''

''फिर क्या हुआ?'' मोनू ने सवाल किया।

''सन् 1504 ई. में हेनलीन की बनायी घड़ी बाजार में आ गयी। यह आकार में बड़ी थी। अतएव सुविधाजनक बनाने के ख्याल से इसके आकार को छोटे से छोटा करने की कोशिश भी जारी रही।'' दादा जी कहते–कहते खांसने लगे। गला साफ होने पर फिर बोले, ''हेनलीन के समय की बनायी हुई एक घड़ी आज भी मौजूद है।''

''कहाँ है वह घड़ी?'' मोनू ने जानना चाहा।

''फिलेडेल्फिया मेमोरियल हॉल संग्रहालय में,'' दादा जी ने बच्चों को जानकारी दी।

''यह संग्रहालय कहाँ है?''

''जर्मनी में,'' दादा जी बोले।

''आगे कहिए,'' अर्चना ध्यान से दादा जी की सारी बातें सुन रही थी।

दादा जी ने अपनी कहानी आगे बढ़ायी। ''छोटी घड़ी बनाने की कोशिश में एक ऐसी किस्म की घड़ी कुछ समय के बाद बनायी गई, जिसे महिलाएं अपने गले में पहनने वाली हार में पेंडुलम की जगह आसानी से लगा सकती थी।''

''बहुत खूब!'' वन्दना चहकी।

''कई सुन्दर डिजाइनों में ऐसी घड़ियां बननी शुरू हो गयीं।'' दादा जी बोलते रहे, ''प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व घड़ियां जेब में रखी जाती थीं। युद्ध के दौरान सैनिकों को यदा–कदा ऐसी घड़ियों से समय देखने में काफी कठिनाई होती थी।''

''कैसी कठिनाई?'' चन्दन नहीं समझ सका।

''जब सैनिक गहरी खाई में छिपे रहते या फिर किसी दलदल से गुजर रहे होते अथवा किसी वजह से उनके दोनों हाथ फँसे होते तो वैसी स्थिति में जेब में हाथ डालकर घड़ी निकालना और समय देखना संभव नहीं हो पाता।'' दादा जी लगातार बोलते रहे, ''ऐसी कठिनाइयां जब प्रकाश में आयी तो और भी सुविधाजनक घड़ी बनाने की बात सोची जाने लगी।''

''अच्छा तो फिर?'' किसी ने हुंकारी दी।

''आदमी की खोपड़ी के आकार की घड़ी स्कॉटलैंड के मेरी क्वीन के पास थी,'' दादा जी खांसी की वजह से थोड़ा ठहर कर फिर बोलने लगे, ''ये सारी घड़ियां असुविधाजनक थीं। अतएव कलाई में बांधने वाली छोटी घड़ी की तरफ घड़ी बनाने वाले का ध्यान गया। जानते हो, पहली कलाई घड़ी कब बनी?''

''नहीं तो!'' बच्चों ने एक साथ कहा।

''सन् 1581 के करीब, दादाजी ने जानकारी देते हुए आगे कहा, और यह घड़ी इंग्लैड की महारानी एलिजाबेथ को उपहारस्वरूप दी गयी। सोने की बनी इस घड़ी में हीरे जवाहरात भी टंके थे। काफी कीमती थी यह घड़ी। इस घड़ी में भी एक ही सुई थी।''

कहते–कहते दादा जी को फिर खांसी आ गई। खांसते–खांसते जब गला साफ हुआ और वह सहज हुए तो फिर बोलने लगे, ''सन् 1676 ई. में घड़ी में और भी सुधार हुआ। अब घड़ी में दो सुईयों का प्रयोग होने लगा। चाभी से चलने वाली स्वचालित घड़ी सन् 1708 ई. में पहली बार बनी। स्विट्ज़रलैंड इसमें आगे रहा। दीवार घड़ी भी बनी।''

''क्या कहानी खत्म हो गयी?'' मधुलिका पूछ बैठी।

''नहीं।'' जवाब मिला।

''उसके बाद क्या हुआ?'' अर्चना ने उत्सुकता व्यक्त की।

''कालान्तर में घड़ी में घंटा और मिनट के बाद सेकेंड वाली सुई भी जुड़ गयी। अलार्म घड़ी भी बनी। यही नहीं, घड़ी में कैलेंडर और केलकुलेटर भी लगाया गया। बोलने वाली घड़ी भी ईजाद हुई।'' कहते–कहते दादा जी चुप हो गए।

''बोलने वाली घड़ी कैसी होती थी?'' मोनू ने जिज्ञासा दिखाई।

थी। मगर जब सैनिकों ने ऐसी घड़ी को अपनी कलाई में बांधना शुरू किया तो फिर धीरे–धीरे यह प्रचलन में आता गया और पुरुषों ने भी अपनी कलाई में घड़ी बांधना शुरू कर दिया। आज महिलाएं और पुरुष सभी अपनी–अपनी कलाइयों में घड़ी बांधने लगे हैं। मगर एक फर्क अभी भी है। महिलाओं के लिए जो घड़ियां बनती हैं, उनके डिजाइन और सजावट पुरुष के लिए बनी घड़ी से भिन्न हुआ करती हैं। दादा जी ने कहानी खत्म करते हुए कहा, ''इस तरह घड़ी की जन्मकथा एवं उसके विकास की यात्रा कम रोचक नहीं है। आजकल तो ऐसी भी घड़ियां तुम लोगों ने देखी

''इसमें अत्यंत सूक्ष्म स्पीकर लगा होता था। बटन दबाने पर आवाज आती थी– क्या समय हो रहा है।'' दादा जी ने सबको जानकारी दी।

''अरे वाह!'' ''सबने हैरान होकर कहा, ऐसी भी घड़ी बनी है।''

''बिलकुल, दादा जी बोले,'' शुरू में पुरुष वर्ग कलाई घड़ी नहीं पहना करते थे। उस घड़ी की उपयोगिता महिलाओं के लिए ही समझी जाती

होंगी जिनमें सुईयां बिल्कुल नहीं हुआ करतीं। उनमें चार या छह खाने होते हैं और उनमें अंक प्रकट होते हैं। बायें से पहले दो अंक घंटों के, बीच के दो मिनट और अंत के दो अंक सेकेंड को दर्शाते हैं।''

''हाँ, हाँ देखे हैं!'' बच्चे एक साथ बोल उठे।

''अब जाओ।'' दादा जी ने फुरसत की सांस ली।

दो बाल कविताएं : हरजीत निषाद

प्यारी प्यारी सी माँ

सहनशीलता की मूरत है धरती जैसी माँ।
प्यार भरी ममता वाली प्यारी प्यारी सी माँ।।

जीवन के मरुस्थल में शीतल झरने सी माँ।
बिना शर्त दे प्यार हमेशा सुख पहुँचाती माँ।।

खुद जगती बच्चे को सुख की नींद सुलाती माँ।
निष्ठा प्रेम लगन उन्नति का पाठ पढ़ाती माँ।।

सिखलाती प्रोत्साहित करती है प्रिय लगती माँ।
धूप छांव में घुली मिली सी मन में रहती माँ।।

फूल जैसा

मुस्कुराते हैं हर हाल में फूल,
भले ही आस पास हों इनके शूल।
हँसते रहना है स्वभाव इनका,
हवाएं बेशक हों प्रतिकूल।।

सज्जनों का स्वभाव होता फूल जैसा,
धूप हो या छाँव सदा एक जैसा।
खुशी और महक बांटते हैं सदा,
पास आये जो भी कोई भी कैसा।।

स्पर्श करने पर हैं सुख देते,
काँटों की तरह नहीं ये दुःख देते।
नागफनी के तीखे शूलों के बीच,
पुष्प प्रसन्नता से हैं रह लेते।।

संग्रहकर्ता : महन्थ राजपाल (उटुरु कला)

कभी न भूलो

- विश्व शान्ति का आध्यात्मिक ही एक मात्र साधन है।
- ज्ञान और कर्म के संगम से ही पृथ्वी स्वर्ग बनेगी।
- जीवन के विकास के लिए अभिमान का त्याग परम आवश्यक है। अभिमान से घृणा का जन्म होता है, प्यार का अन्त होता है।
- अहिंसा से ही मानव का अस्तित्व सुरक्षित रह सकता है।
- मानवता ही मानव का सबसे बड़ा धर्म है।
- मानव की शक्ति विनाश में नहीं, कल्याण में लगे।
- अहिंसा से ही मानव का अस्तित्व सुरक्षित रह सकता है।
- जैसे प्रकाश सूर्य का, खुशबू फूल का प्रतीक है उसी प्रकार इन्सानियत इन्सान का प्रतीक है।

  — बाबा हरदेव सिंह जी
- न बैर की न तकरार की, आज है जरूरत प्या की।

  — निरंकारी मिशन का संदेश
- अहिंसा सत्य की खोज का आधार है।
- प्रार्थना (प्रभु–सुमिरण) आत्मा की पुकार है, इसे करो। — महात्मा गाँधी
- विचारों की स्वतन्त्रता ही दुनिया की सबसे बड़ी आशा है। अतैव गुलामी चाहे राज्य की हो, धर्म की हो, रूढ़िवाद पालन की हो; उससे व्यक्ति और समाज को मुक्त करने का कर्तव्य ही बुद्धिजीवियों के सामने सबसे बड़ा कर्तव्य है। — डॉ. राधाकृष्णन
- प्यार और सत्कार का मूल श्रोत ब्रह्मज्ञान है। — निर्मल जोशी
- संसार में जो कुछ भी है वह सुन्दर भी है और असुन्दर भी। जिसकी जिसमें रुचि होती है वही उसे सुन्दर लगता है।

  — हितोपदेश
- श्रद्धा से युक्त होकर यदि कोई जानने की इच्छा से पूछे तो उससे बात करनी चाहिए। श्रद्धारहित मनुष्यों से बात करना वन में रोने के समान है। — पंचतन्त्र
- अहिंसा ऐसी मिसाइल है जिससे विश्व में शान्ति स्थापित की जा सकती है।

  — डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
- आत्मा का उद्धार ही अहिंसा है और आत्मा को अधोगति में रखना हिंसा है।

  — श्रीमद्भगवद्गीता
- आप किसी व्यक्ति को अच्छी भेंट ज्ञान और हुनर दे सकते हैं। आप किसी को खाना देंगे लेकिन उसे कल भी भूख लगेगी, इसके बजाय आप हुनर सिखाकर उसे जिन्दगी भर कमाने के योग्य बना सकते है। — स्वामी रामतीर्थ

जानकारीपूर्ण लेख
– शिवचरण चौहान

बहुत चालाक पक्षी है 'तोता'

लाल चोंच, हरे पंख और गले में लाल काली धारी की वजह से तोते की पहचान आसानी से हो जाती है। तोती की चोंच पीली होती है और इसी कारण नर मादा की पहचान हो जाती है। तोते की गणना सुन्दर पक्षियों में की जाती है। मनुष्य की आवाज की नकल करना तथा सुन्दर होना ही तोते के लिए दुर्भाग्य का कारण बना। दुनिया भर में सुन्दरता प्रेमियों के कारण तोते को पराधीन होना पड़ा और उसे पिंजरे में कैद होना पड़ा।

दुनिया भर में तोते की करीब 350 जातियां–प्रजातियां पाई जाती हैं। करीब 70 प्रजातियां अब विलुप्त हो चुकी हैं। भारत में करीब आधा दर्जन तरह के तोते दिखाई देते हैं। वन विनाश के साथ तोतों के अस्तित्व पर संकट आने वाला है। वैसे तो वन संरक्षण अधिनियम के तहत तोते को पकड़कर बेचना, पिंजरे में रखना जुर्म है और तीन माह तक की सजा का प्रावधान है किन्तु

शायद ही आज तक तोता पकड़ कर बेचने वालों, पालने वालों को कहीं सजा दी गयी हो। मनुष्य ने आज भी तोते को गुलाम, अपने आधीन बना रखा है। तोते की उम्र पचास से सत्तर साल की बीच पाई गई है। पिंजरे में तोते जल्दी मर जाते हैं।

संसार में सबसे छोटा तोता पिगमी तोता है। ये न्यूगिनी में पाया जाता है। ये करीब 8 से 10 सेन्टीमीटर लम्बा होता है; जबकि मैक्सिको में पाया जाने वाला सुर्ख मैकाओ तोता तीन फीट लम्बा होता है। काकातुआ भी तोतों से मिलती–जुलती प्रजाति है। भारत में तोता 6 इंच से लेकर एक फीट तक का होता है। भारत में देशी तोता, पहाड़ी तोता, जंगली तोता सहित छः प्रजातियां पाई जाती हैं।

तोते शाकाहारी होते हैं और आम, अमरूद, बेर, इमली, सेब, हरी मिर्च, टमाटर, नीम की निबौली, गेहूँ की बालियां, मटर की फलियां बड़े मजे से खाते हैं। बागों तथा खेती में तोतों के झुण्ड टें–टें करते हुए उतरते हैं और रखवालों की नाक में दम कर देते हैं। तोतों की चोंच नुकीली व टेढ़ी होती है, जिसके सहारे ये फल, फलियां कुतर–कुतर कर खाते हैं। मुसीबत पड़ने पर ये चोंच से प्रहार भी करते हैं। तोते के पंजों में चार उँगलियां होती है। उँगलियां लाल रंग की मुड़ी हुई होती हैं। जिनके सहारे ये डाली को पकड़ कर उल्टा लटक कर भी चल लेते हैं।

तोती जिसे टुइयां भी कहते हैं, साल में एक बार मार्च–अप्रैल में तीन से चार अण्डे देती है। ये आम, महुआ, पीपल, नीम आदि →

बाल कविता : मीनू सिंह

चिड़िया

एक थी चिड़िया मोटी–ताजी,
उड़ने से लाचार थी।
ऊपर से तो स्वस्थ दिख रही,
अन्दर से बीमार थी।

चलते फिरते दाना खाती,
पानी पीती गटर–गटर।
फूल की सेज पर बैठी–बैठी,
सोती रहती थी दिनभर।

बंदर भालू उसे समझाते,
किया करो तुम भी कुछ काम।
काम करोगी स्वस्थ रहोगी,
सुस्ती छोड़ो त्यागो आराम।

धीरे–धीरे बात पते की,
समझ गई चिड़िया रानी।
अपने काम स्वयं अब करती,
दूर हुई सब परेशानी।

→

वृक्षों के कोटर में अपना घोंसला बनाते हैं। करीब एक माह में बच्चे उड़ने लायक हो जाते हैं। तोते के दुश्मनों में बिल्ली सबसे प्रमुख है। इसके अलावा साँप और नेवले भी तोते को खा जाते हैं। मनुष्यों में बहेलिया तोतों के सबसे बड़े दुश्मन हैं जो तोतों के बच्चों को पकड़ कर पिंजरों में डालकर लोगों को बेचते हैं।

खेतों, बागों, खलिहानों में टें–टें करते तोते जितने खूबसूरत लगते हैं। उतने पालतू तोते या चिड़ियाघरों में रहने वाले तोते खूबसूरत नहीं होते। पिंजरे का तोता, राम–राम, नमस्ते भी करता है। दोहा–चौपाई भी सुनाता है और घर के लोगों के नाम लेकर भी बुलाता है किन्तु वह उदास रहता है।

तोतों को पट्टू, मिट्ठू, टुइयां, सुआ, शुक आदि अनेक नामों से जाना जाता है। अंग्रेजी में इसे 'पैरेट' कहते हैं। तोते लगभग सभी देशों में पाए जाते हैं। तोतों में बहुत कम बीमारियां होती हैं किन्तु प्रदूषण ये बर्दाश्त नहीं कर पाते हैं।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

किट्टी की मम्मी उसे हमेशा समझाती कि अत्यधिक मीठा खाना हानिकारक होता है।
परन्तु किट्टी अपने चटोरे स्वभाव के कारण टॉफी व चॉकलेट हमेशा खाती रहती है।
वह फल, सब्जी, दूध और हरी सब्जियां खाना कम पसंद करती है।
एक दिन अचानक किट्टी के दाँत में दर्द शुरू हो गया।
किट्टी दर्द से कराहने लगी तो उसे दाँतों के डॉक्टर के पास ले जाया गया।

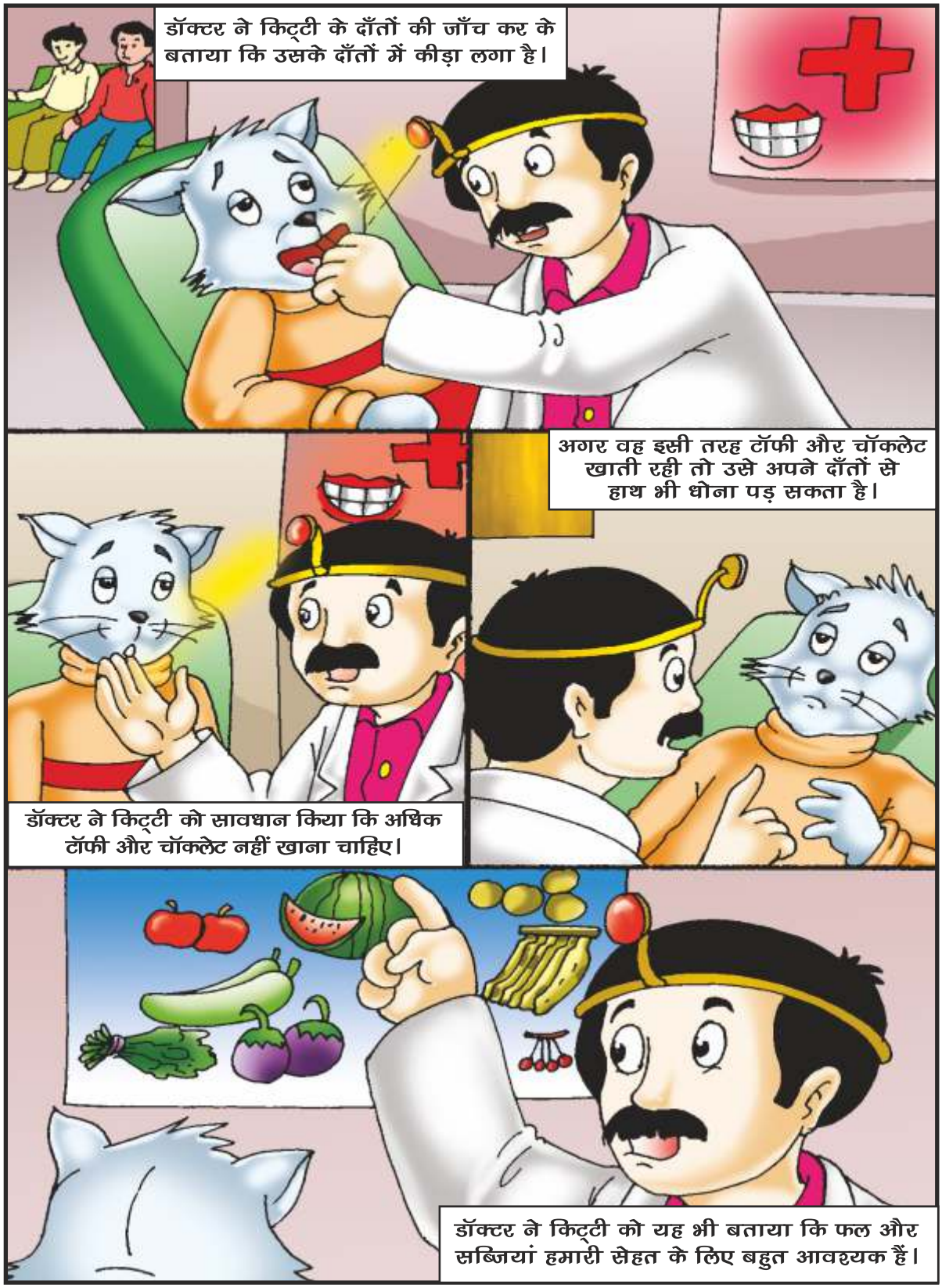
डॉक्टर ने किट्टी के दाँतों की जाँच कर के बताया कि उसके दाँतों में कीड़ा लगा है।
अगर वह इसी तरह टॉफी और चॉकलेट खाती रही तो उसे अपने दाँतों से हाथ भी धोना पड़ सकता है।
डॉक्टर ने किट्टी को सावधान किया कि अधिक टॉफी और चॉकलेट नहीं खाना चाहिए।
डॉक्टर ने किट्टी को यह भी बताया कि फल और सब्जियां हमारी सेहत के लिए बहुत आवश्यक हैं।

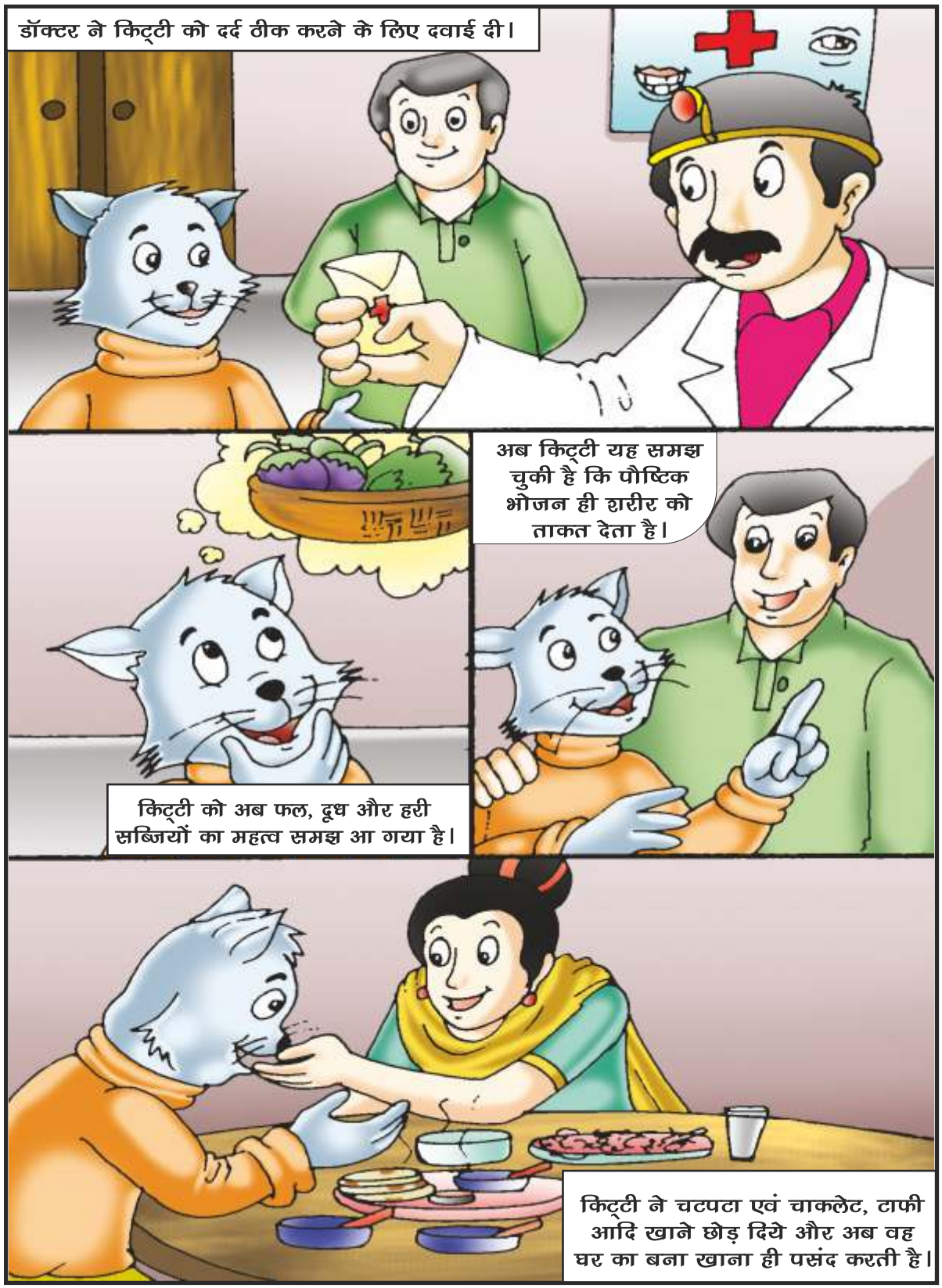
डॉक्टर ने किट्टी को दर्द ठीक करने के लिए दवाई दी।
अब किट्टी यह समझ चुकी है कि पौष्टिक भोजन ही शरीर को ताकत देता है।
किट्टी को अब फल, दूध और हरी सब्जियों का महत्व समझ आ गया है।
किट्टी ने चटपटा एवं चाकलेट, टाफी आदि खाने छोड़ दिये और अब वह घर का बना खाना ही पसंद करती है।

संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन' (अनूपगढ़)

★ वर्ष 1848 में विश्व प्रसिद्ध नियाग्रा जलप्रपात बीस घंटों के लिए रूक गया था। दरअसल, बर्फ के आ जाने से नियाग्रा नदी में जाम लग गया था।

★ दुनिया में सबसे पुराना झण्डा डेनमार्क का है। यह 13वीं सदी से चला आ रहा है।

★ एक नया जन्मा कंगारू लगभग एक इंच ही लम्बा होता है।

★ अधिक गहराई तक जाने के लिए मगरमच्छ अपने पेट में पत्थर निगल जाता है।

★ डॉल्फिन सोते समय अपनी एक आंख खुली रखती है।

★ सबसे कठोर पदार्थ हीरा होता है।

★ धरती का सबसे करीबी तारा सूर्य है।

★ विश्वविख्यात खेल शतरंज का जन्म भारत में ही हुआ था।

★ ऑस्ट्रेलिया में टिनास नामक एक वृक्ष पाया जाता है, जो साल में दो बार अपनी छाल बदल लेता है।

★ जावा (सुमात्रा) के समुद्र तट पर एक जीव भक्षक वृक्ष पाया जाता है। इस वृक्ष के नीचे जो कोई भी प्राणी खड़ा हो जाता है, उसे यह अपनी खतरनाक टहनियों से ढक लेता है। प्राणी मर जाता है तो टहनियां अपने आप ऊपर उठ जाती हैं।

★ अपनी लम्बी जीभ से जिराफ अपने कान भी साफ कर सकता है।

★ भारत विश्व का सातवां सबसे बड़ा देश है।

★ घोड़े खड़े–खड़े ही नींद लेते हैं।

★ जिराफ के जन्म से ही सींग होते हैं। नर–मादा दोनों के ही माथे पर हड्डी जैसी दो मूठ होती हैं, जो इसके सींग कहलाते हैं।

★ भारत विश्व का सबसे बड़ा चाय उत्पादक देश है।

★ एक पेंसिल से आप 35 मील लम्बी लाइन खींच सकते है या अंग्रेजी के 50,000 शब्द लिख सकते हैं।

★ एक चूहा पांच मंजिला इमारत से गिरने पर भी चोटिल नहीं होता।

★ दांतों की ऊपरी परत पर चढ़ा पदार्थ इनेमल शरीर का सबसे सख्त पदार्थ होता है।

★ जानवर अपने बच्चों से जुड़ने, साफ करने और उनके विकास को बढ़ावा देने के लिए उन पर जीभ फेरते हैं।

पहेलियों के उत्तर :

1. मटर, 2. ढोलक, 3. दस्ताने, 4. कडाही, 5. हवा, 6. पानी, 7. गैस, 8. द्रव्य, 9. चुंबक, 10. पुस्तक।

विशेष लेख : गोपाल जी गुप्त

कीट-पतंगों की अजीब जीवनचर्या

इस सृष्टि में निवास करने वाले प्रत्येक जीव–जन्तु की जीवनचर्या अलग–अलग होती है। जिनमें कई विचित्रताएं देखने को मिलती हैं। कीट–पतंगों, कीड़ों–मकोड़ों को वैसे तो उष्ण एवं शीत वातावरण अधिक भाता है और इसी से वे जंगलों, पर्वतों, नदियों, घाटियों, सागरीय तटों तथा मैदानी इलाकों में बहुतायत से पाये जाते हैं जबकि महासागरों अथवा खारे पानी वाली झीलों के आसपास काफी कम पाये जाते हैं।

कीट वैज्ञानिकों का कहना है कि कीटों का जन्म लगभग 40 करोड़ साल पहले हुआ था तब से ये लगातार अपना रूप बदलते तथा वंश–वृद्धि करते पृथ्वी पर चारों ओर फैल चुके हैं। इनकी संरचना, वंश–वृद्धि क्षमता, जीवन–पद्धति, कार्य–कुशलता अति विचित्र है। सूई की नोंक से निकल जाने वाले अति सूक्ष्म कीट से लेकर 30 सेण्टीमीटर तक लम्बे–चौड़े कीट–कीड़े पृथ्वी पर विद्यमान हैं। कुछ कीट एक समय में हजारों अण्डे देते हैं तो कुछ बहुत कम, अपवादों को छोड़कर इनका जीवनचक्र कुछ घण्टों–दिनों से लेकर कई सप्ताहों–महीनों तक होता है।

कीट शास्त्रियों के अनुसार विश्व में कीटों की 30 करोड़ प्रजातियां हैं जिनमें मात्र दशमलव दो प्रतिशत अर्थात् 15 लाख प्रजातियों की ही जानकारी हो सकी है। फूँगा (बॉटेल) जाति की ही 3 लाख प्रजातियां हैं। झिगुंर, तिलचट्टे, टिड्डा, खटमल, तितली, जुगनू, पतंगें, जूँ, ततैया, पिस्सू, दीमक, मधुमक्खी, मक्खी, पाँखी आदि की अनेक प्रजातियों का पता कीट वैज्ञानिक लगा चुके हैं जबकि इनकी कई प्रजातियों के बारे में वैज्ञानिक जानकारी पाने के लिए अनुसंधान कर रहे हैं।

नन्हीं सी दिखने वाली चींटी अपने वजन से 50 गुना भार उठा सकती है। ये अपनी बांबियां (घर) बड़ी कुशलता से बनाती हैं और 120डिग्री तापमान में भी रह सकती हैं। मक्खियों की किटीनोमिड प्रजाति भी 102 डिग्री से.ग्रेड तापमान में जीवित रहती है। भारत, श्रीलंका, आस्ट्रेलिया, जावा में हरे रंग की चीटियां भी मिलती हैं जो पेड़ों पर पत्तों की सिलाई कर 300 मिलीमीटर चौड़ा घोंसला बनाती है जो कारीगरी का बेमिसाल नमूना होता है। इस नन्हीं हरी चींटी के मुँह में 10 से भी ज्यादा दाँत होते हैं जिनके सहारे पत्तों की सिलाई कर घोंसला बनाती है, इसके लिए वह किसी पहले बने घोंसले से कीट डिम्ब (लार्वा) को दाँतों से दबाकर धागा खींच कर उसी से सिलाई करती हैं। यदि कोई पत्ता चींटी की पहुँच से दूर होता है तो कई चींटियां एक दूसरे को पकड़कर एक लम्बी श्रृंखला बनाती हैं फिर दूर वाले पत्ते तक पहुँच उसे खींच कर सिलती हैं। वृक्षों की ओट में बने ये घोंसले सुरक्षित रहते हैं। इन चींटियों का भोजन अन्य सूक्ष्म ऐसे कीट होते हैं, जो कृषि उपज को नुकसान पहुँचाते हैं। अतः किसान इन्हें देखकर उत्साहित होते हैं। इन चींटियों के पेट में विशिष्ट तैलीय पदार्थ होते हैं जिनसे दवायें बनती हैं।

अफ्रीका में पीठ पर कूबड़ वाली चींटियां भी होती हैं। जो पेड़ों पर व्यवस्थित ढंग से मिट्टी का घरोंदा बनाती हैं जो इतने मजबूत होते हैं कि तेज बारिश तथा तूफान भी उनको नुकसान नहीं पहुँचा सकते। लायन ऐंट नामक चींटी की एक प्रजाति सूखे रेत में सूंड की तरह गड्ढ़ा बनाकर बैठ जाती है जैसे ही कोई शिकार सामने आता है उस पर ये रेत कणों की तेज बौछार कर उसे गिरा देती हैं फिर उसे गड्ढ़े में खींच कर चट करती हैं।

कीट–पतंगें आपस में संगीत जैसी ध्वनि निकाल कर बातें करते हैं। कीट वैज्ञानिकों ने ऐसी 10,000 से अधिक प्रजातियों की खोज कर ली है। कुछ कीटों के सूंघने की शक्ति बहुत ही तीव्र होती है, कुछ तो 25–30 किलोमीटर दूर तक की गन्ध पा लेते हैं। कुछ प्रजातियां चारों ओर अपनी नजरें घुमाकर देख सकती हैं।

अधिकांश कीटों के पंख होते हैं जो प्रायः दोनों ओर दो–दो की संख्या में होते है, किन्तु

टिड्डा के दोनों ओर एक–एक ही पंख होते हैं। पापुआ–न्यूगिनी में 'एलेक्जेण्ड्रा' नामक तितली के पंख 30 सेंटीमीटर के होते हैं किन्तु इनका भार ढाई ग्राम ही होता है जबकि अफगानिस्तान की 'माइकोसाइक्री ऐरियान' के पंख का फैलाव सबसे कम यानी 0.067 सेंटीमीटर ही होता है। पतंगा एक मात्र ऐसा कीट है जिसका पंख सबसे कम फैलाव वाला होता है अर्थात् 0.018 सेंटीमीटर। 'क्वीन एलेक्जेण्ड्रा' जहरीली तितलियों में शुमार है। लाल रंग की 'एडमिरल' तितली के सिर पर सींग जैसे दो तार निकले रहते हैं जो उसे भोजन तलाशने, शत्रु मित्र की पहचान करने और घर से भटकने पर घर तलाशने में मदद करते हैं।

'ट्रेपडोर स्पाइडर' नामक मकड़ी गुरिल्ले की तरह जमीन के अन्दर बने सुरंग से कीटों का शिकार करती है। 'वुल्फ स्पाइडर' भेड़िए की तरह शिकार करती है। शिकार पर झपट कर उसके शरीर में विषैले दाँत से जहर पहुँचा कर मार डालती है। 'क्रैब स्पाइडर' शरीर को ऐसे फुला लेती है कि इसे देखकर खिले फूल का भ्रम होता है। जैसे ही कोई कीड़ा उस पर बैठा यह उसे पंजे में कैद कर उसे दबाकर मार डालती है। ये प्रजातियाँ अन्य सामान्य मकड़ियों की तरह जाले नहीं बुनती।

एक जूँ का वजन 0.000005 ग्राम होता है। इस तरह 2 लाख से अधिक जूँ का वजन कहीं मुश्किल से एक ग्राम हो पाता है।

कीट वैज्ञानिकों के अनुसार कीटों में मक्खी श्रेष्ठ धावक है जो 400 मीटर प्रति सेकेण्ड की गति से उड़ती है तथा एक घण्टे में यह 1310 किलोमीटर की यात्रा कर सकती है और तेज उड़ने वाली मक्खी 'डीयर फ्लाई' की गति 1368 किलोमीटर प्रति घण्टे होती है जबकि अफ्रीका की 'बोट फ्लाई' के उड़ान की गति सबसे तेज है जो 16 घण्टे में पूरे भूमण्डल का चक्कर लगा सकती है इस तरह इसका मुकाबला जेट विमान भी नहीं कर सकता।

जाजिला (अफ्रीका) जंगल में एक अनूठा कीट पाया जाता है जो शत्रु पर पिस्तौल की गोली की तरह जहरीली गैस छोड़ता है जिससे इतनी गर्मी पैदा होती है कि शत्रु धराशायी हो जाता है। इस गैस से बारूद जैसी गन्ध निकलती है।

चमगादड़ के चेहरे जैसा चूहे की तरह का 'एंकक' प्राकृतिक रूप से अश्रु गैस की ग्रन्थि से लैस होता है। शत्रु का सामना होते ही स्वयं यह गैस निकलकर शत्रु को अन्धा बना देती है और एंकक की रक्षा करती है। यह गैस 325 सेण्टीमीटर तक के क्षेत्र को प्रभावित करती है।

दीमक की बांबी में अगर चींटियां घुस जाती हैं तो सामान्य दीमकों से हटकर लड़ाके दीमक (जिनके सिर पर पिचकारी जैसी होती है) चींटियों पर विषैला द्रव छिड़कते हैं और चींटियां आगे नहीं बढ़ पाती हैं। इस तरह उनकी रक्षा होती है। भूमध्य रेखा वाले क्षेत्रों में दीमक की एक ऐसी प्रजाति पाई जाती है जो 700 सेण्टीमीटर तक ऊँची काफी मजबूत मीनार तैयार कर उसी में रहती है। इन मीनारों को तोड़ पाना काफी कठिन बताया जाता है।

प्राग तथा दक्षिणी अमेरिका में लगभग 9 सेण्टीमीटर लम्बी जुगनू की एक प्रजाति खोजी गयी है जिसके सिर की तरफ से लाल तथा पूँछ की तरफ से हरे रंग के प्रकाश बिन्दु चमकते रहते हैं।

मेडागास्कर में एक बिना पांव वाली छिपकली पाई गयी है जो शत्रु से रक्षा करने के लिए अपनी पूँछ को इस प्रकार से मोड़ती है कि पूँछ अलग होकर जमीन पर गिर जाती है और काफी देर तक उछलती रहती है। शत्रु पूँछ की ओर झपटता है और छिपकली गायब हो जाती है। टूटी पूँछ जल्द ही पुनः उग आती है।

चमगादड़ शिकार करने के लिए उड़ते समय, (मनुष्य की सुनने की क्षमता से काफी कम आवाज में) आवाज करता है। जो किसी भी सामने पड़ने वाली वस्तु से टकरा कर वापस चमगादड़ तक पहुँचती है और इसी के आधार पर वह शिकार पर आक्रमण करता है।

वर्ग-पहेली के उत्तर

1 इं	दि	2 रा	■	3 सा	त
डी	■	4 ज	मै	का	■
5 ज	6 हा	न	■	7 र	8 मा
■	की	■	9 शे	■	री
10 क्ष	■	11 स	र	12 पं	च
13 त्रि	पो	ली	■	जा	■
य	■	14 म	नो	ब	ल

आलेख : ईलू रानी

कुदरत ही बनाती है मनमोहक घाटियां

पृथ्वी का नजारा अपने आप में बड़ा खूबसूरत है। कल–कल बहतीं नदियां, हरे–भरे पेड़, पर्वत, गुफाएं, घाटियां, रेगिस्तान, ग्लेशियर आदि हमें पृथ्वी पर दिखाई देते हैं।

दोस्तों आज हमें पृथ्वी की घाटियों के बारे में रोचक जानकारी दे रहे हैं। आखिर ये घाटियां बनती कैसे हैं? आओ, यही कुछ जानते हैं।

पहाड़ों के बीच समतल या उबड़–खाबड़, लंबे–चौड़े स्थानों को घाटी कहा जाता है। घाटियां कई प्रकार से बनती हैं। अधिकतर घाटियां नदियों द्वारा बनती हैं। इन्हें बनने में हजारों–लाखों वर्ष लग जाते हैं। हाँ, आज हमें जहाँ घाटियां दिखाई देती हैं। हजारों वर्ष पहले वहाँ कोई बड़ी नदी अविरल रूप से बह रही होगी। भू–वैज्ञानिकों के तथ्यों के अनुसार नदियों के कारण 60 प्रतिशत घाटियां बनती है। इसके अलावा ग्लेशियरों तथा पृथ्वी की आंतरिक संरचना में निरंतर हो रही उथल–पुथल से भी घाटियां बनती हैं। पृथ्वी की आंतरिक संरचना में होने वाली उथल–पुथल से बनी घाटियों को 'रिफ्ट घाटी' कहते हैं, जो पांच हजार कि.मी. तक फैली है। यह मनोरम घाटी सीरिया से पूर्वी अफ्रीका तक फैली है।

आज से हजारों वर्ष पूर्व मानव सभ्यताओं का विकास नदियों और घाटियों में हुआ। संसार की सभी प्राचीन संस्कृतियों का उद्‌गम स्थल नदी घाटियां ही रही हैं। कारण उन्हें उन क्षेत्रों में सभी सुविधाएं उपलब्ध थीं।

मोहनजोदड़ों और हड़प्पा की सभ्यता का जिक्र इतिहास में मिलता है। ये दोनों भी नदियों के किनारे विशाल घाटियों में बसी हुई थीं।

आस्ट्रेलिया में तो कुदरती घाटियों की गहराई 50 से 65 किलोमीटर तक है। इनमें वर्षा के पानी का भराव हो जाता है, लेकिन वर्षा उपरान्त पृथ्वी के गर्भ में समा जाता है। ये हरी–भरी घाटियां बड़ी मनमोहक हैं, तथा प्रकृति के सुन्दर नजारों में चार चांद लगाती हैं।

पढ़ो और हँसो

सोनिया : सेठजी लाल मिर्च देना।
सेठ : (नौकर से) हरी मिर्च देना।
सोनिया : सेठजी लाल मिर्च चाहिए।
सेठ : हरी मिर्च देना जल्दी।
सोनिया (गुस्से में) : लाल मिर्च मांग रही हूँ लाल।
सेठ : बहन जी। लाल मिर्च ही दूँगा, हरी तो इस नौकर का नाम है।

☆☆☆☆☆

एक व्यक्ति के दांत में कीड़ा लग गया। वह डॉक्टर के पास गया तो डॉक्टर बोला– चार दिन तक सुबह शाम दूध–बिस्कुट लो और पांचवें दिन सिर्फ दूध लेना, कीड़ा जरूर निकल जाएगा......

उसने चार दिन तक दूध–बिस्कुट लिया और पांचवें दिन सिर्फ दूध लिया..... कीड़ा बाहर निकला और बोला– आज बिस्कुट नहीं है क्या..?

☆☆☆☆☆

पति रोज रात को चीनी का डिब्बा खोलकर देखता और सो जाता।

पत्नी से रहा नहीं गया और उसने पति से पूछ ही लिया– क्यूं जी ये रोज रात को आप चीनी का डिब्बा खोलकर क्या देखते हो?

पति : डॉक्टर ने कहा है कि घर पर रोज शुगर चैक कर लिया करो।

–सुषमा (दिल्ली)

राजेश :(टैक्सी ड्राईवर से) सिद्धिविनायक मंदिर जाओगे क्या?
टैक्सी ड्राईवर : हाँ साहब, जाऊंगा।
राजेश : ठीक है, जाओ। वापसी में मेरे लिए प्रसाद लेते आना।

☆☆☆☆☆

पठान : हकीम साहब मेरे दोस्त की तबियत बहुत खराब है, उसे नींद नहीं आ रही है। कृपया नींद आने की कोई दवाई दे दीजिये।
हकीम : यह लो पुड़िया और इसमें से पच्चीस पैसे के सिक्के पर जितनी आए उतनी रखकर पानी से दे देना।

अगले दिन पठान घबराया हुआ आया।

पठान : हकीम साहब आपने जो दवाई दी थी उसे खाकर मेरे दोस्त की मौत हो गयी।
हकीम : वो कैसे? यह बताओ तुमने दवाई दी कैसे थी?
पठान : आपने कहा था कि पच्चीस पैसे के सिक्के पर जितनी आए उतनी रखकर खिला देना। मेरे पास पच्चीस पैसे का सिक्का तो नहीं था। इसलिए मैंने पांच पैसे के सिक्के पर रखकर पांच बार दे दी।

शिक्षक : किसी ऐसी जगह का नाम बताओ जहाँ पर बहुत सारे लोग हों फिर भी तुम अकेला महसूस करो?

राजेश : एग्जामिनेशन हॉल।

★★★★★

एक जाट दिल्ली चला गया रेलवे स्टेशन पर अखबार वाले से बोला– एक अखबार देना।

अखबार वाला : हिन्दी या अंग्रेजी का।

जाट : .... भाई, कोई–सा बी दे दे, मन्नै तो रोटी लपेटणी है।

★★★★★

टीचर : तुम्हें पता है हमारे पूर्वज बन्दर थे।

जाट : थारे होंगे, म्हारे तो चौधरी थे।

★★★★★

गाँव की एक लड़की से कम्प्यूटर क्लास में पूछा गया– डाटा क्या होता है?

लड़की बोली : सो सिम्पल। तेल की शीशी के ढक्कन को डाटा कहते हैं।

★★★★★

लोकेश : देखो यह अच्छी बात नहीं है, जब भी मेरी पत्नी तानपूरे पर रियाज करने लगती है, तुम्हारा गधा रेंकने लगता है।

धोबी : लेकिन शुरूआत तो आपकी पत्नी ही करती है।

★★★★★

मरीज : मुझे बीमारी है कि खाने के बाद भूख नहीं लगती, सोने के बाद नींद नहीं आती, काम करूं तो थक जाता हूँ।

डॉक्टर : सारी रात धूप में बैठो ठीक हो जाओगे।

★★★★★

महेश : सबसे पहली सुरंग किसने बनाई?

सुरेश : चूहों ने।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

राजेश : (सुशील से) यार! आज तो सारा पेपर ही खाली ही दे आया हूँ। एक भी प्रश्न मैंने हल नहीं किया।

सुशील :मूर्ख ये क्या किया तूने। अब निरीक्षक यही सोचेंगे कि तुमने मेरी नकल की है।

★★★★★

दो मूर्ख एक पेड़ की डाल से लटके थे तभी एक मूर्ख नीचे गिर गया।

पहला बोला– क्यों थक गये?

दूसरा बोला– थका नहीं पक गया।

★★★★★

जंगल में हाथी जा रहा था। उसके पीछे दो चूहे चल रहे थे। एक चूहा दूसरे चूहे से बोला– इस हाथी से पुराना हिसाब चुकाना है, तू बोले तो इसे लंगड़ी मारकर अभी गिरा दूँ?

दूसरा चूहा बोला– रहने दे यार, हम दो हैं और वह अकेला। लोग क्या सोचेंगे? दो चूहों ने मिलकर एक बेचारे हाथी को गिरा दिया।

★★★★★

लाली : अरे मोना आजकल तो तू अंग्रेजी बहुत बोलती है?

मोना : अरे दीदी पेपरों में मैंने अंग्रेजी का पूरा पेपर चबा लिया था।

★★★★★

डाकू : (सेठ से) बोलो सेठ, जान देते हो या माल?

सेठ : भाई जान ही ले लो, माल तो बुढ़ापे तक काम आयेगा।

★★★★★

माँ : (निष्ठा से) अरे तेरी बहन को स्कूल से छुट्टियां मिलने पर तू क्यों रो रही है?

निष्ठा : अगर मैं भी स्कूल जाती तो मुझे भी छुट्टियां मिलतीं।

– प्रियंका चोटिया 'आंचल'

जन्म दिन मुबारक

रिया (ठाणे)

सुहानी (दिल्ली)

श्रेया (फरीदाबाद)

आदित्य (मलाड)

जयन्त गोबिंदानी

ऋषिका (काईनौर)

अर्णव (कान्दवली)

जेनिशा (वेरावल)

सुशील (अहमदनगर)

कुणाल (दिल्ली)

नव्या (भीलवाड़ा)

अश्विन (काशीपुर)

प्रथम (दिल्ली)

सिदकवीर (पातड़ा)

सुमीत (ठाणे)

अनुभवी (रामबाग)

प्रियाशा (कोटकपूरा)

राघवेन्द्र (भीलवाड़ा)

सागर सिंह (आर.एस.पुरा)

रिया (खलीलाबाद)

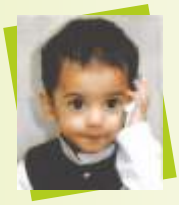
शोभती (बाड़मेर)

आशीष (सिवनी)

नीलांशा (चण्डीगढ़)

यचिका (सवाई माधोपुर)

सिमरन कौर (तपा)

प्रीति (अमलनेर)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्पलेक्स,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

जानकारीपूर्ण लेख : जयेन्द्र

छपाई की विकास यात्रा

आज के आधुनिक दौर में तो पुस्तकें छापने के कई बेहतरीन साधन हैं, लेकिन एक जमाना ऐसा भी था, जब पुस्तकों की छपाई नहीं होती थी, उन्हें हाथों से लिखकर तैयार किया जाता था। जिसमें कई वर्ष लग जाया करते थे। छपाई की शुरूआत कब और कैसे हुई? इसका तो आज तक कोई ठोस प्रमाण नहीं मिला। इतिहास तथ्यों से विदित होता है– चीन में एक व्यक्ति था ''वांग चीक' जिसने लकड़ी के ठप्पे बनाकर सबसे पहली किताब 'हीराक सूत्र' सन् 867 ई. में छापी। लेकिन इसकी लिखावट घिसकर जल्दी ही मिट जाती थी। इसलिए लोगों का ध्यान लोहे के ठप्पे की ओर गया। कई लोगों ने अपने मस्तिष्क की कल्पना के मुतबिक लोहे के अलग–अलग ठप्पे भी बनाये थे।

13वीं सदी के प्रथम चरण में पी. नोन नामक एक चीनी व्यक्ति ने मिट्टी और धातु के टाइप अक्षर बनाये। इसी के बाद कोरिया के राजा ने धातु टाइप बनाने की एक फैक्टरी लगायी। इस फैक्टरी से बने ठप्पे से एक पुस्तक छापी गयी। धीरे–धीरे यह कला यूरोप पहुँची। जहाँ पर जर्मनी के गुटेनबर्ग नाम के व्यक्ति ने धातु टाइप बनाये और उसने 1455 ई. में बाईबिल छापी।

पहले तो लैटिन भाषा ही चलती थी। उसी में किताबें छापी गयी। फिर इंग्लैंड में विलियम केक्स्टन ने अंग्रेजी भाषा में एक पुस्तक छापी। 15 वीं सदी के मध्य में हमारे देश में भी छपाई की मशीनें विदेशों से आईं। हमारे देश में पहली किताब मलयालम, तमिल में छपी।

चार्ल्स विल्किस ने 'भगवद्गीता' और 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' को अंग्रेजी में छपवाया। फिर कालीदास की 'ऋतु संहार' कलकत्ता में देवनागरी लिपि में छापी गई।

मुंबई में भीमान जी ने सबसे पहले छापाखाना लगाने का प्रयत्न किया। उन्होंने इंग्लैंड से मशीनें मंगवाई। पश्चिमी भाग में भारतीय भाषा हिन्दी का पहला छापाखाना 13 जुलाई 1811 ई. में लगा, जिसमें 'मराठी पंचांग' छपी। सन् 1816 ई. में अमेरिकन मिशन प्रेस लगाया गया। इसी तरह 1864 ई. में 'निर्णय सागर प्रेस' के मालिक जावजी दादा ने भारत प्रसिद्ध फाउण्ड्री प्रेस लगाया था। धीरे–धीरे छपाई की मशीनों में कई बदलाव आये, और छपाई की विकास यात्रा आज के दौर में तो सपनों की दुनिया से भी एक कदम आगे निकल चुकी है।

फरवरी अंक का रंग भरो परिणाम

प्रथम :

दक्ष

आयु : 10 वर्ष
786, न्यू प्रेम नगर,
करनाल (हरि.))

द्वितीय :

निष्ठा छाबड़ा

आयु : 12 वर्ष
सी–8, राजा पार्क,
जयपुर (राज.)

तृतीय :

प्रांजल सिंह

आयु : 13 वर्ष
504, एस्टेट–6, सुपरटेक कोर्ट,
सेक्टर 93–ए, नोएडा

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

कंचन बिशनोई (4 केएसपी),
भूमि हंस (हरदेव नगर, दिल्ली),
चिंकी (कलन्दर चौक, पानीपत),
रिया चन्देल (मलकापुरम, विशालपटनम),
हिमांशु (शिवाजी, गुडगांव),
दीक्षा कुमारी (देहरा), निहारिका
(मोहाली), दिपाली (हुडा, कैथल),
भूमिका कुमारी (मोहाली),
काव्या (बाग कालोनी, तपा),
विदुषी (रोहतक),
खुशी राणा (अमरापुरी),
दिव्यांशी सैनी (पीरगढ़),
चाहत शर्मा (काहरू),
दिव्या कोहली (मोरण्डा),
सिमरन कोहली (मोरण्डा),
प्रियंका चौधरी (कसौटी),
अश्मित (सूरत),
शुभ जायसवाल (कजरा बाजार),
जतिन (चण्डीगढ़),
लवलीन आहूजा (मोहाली),
असीम (सावित्री नगर, दिल्ली),
सुमन (चण्डीगढ़),
दिव्यांशी बेंजवाल (अगस्त्यमुनि),
अजय कुमार गौतम (रघवापुर)।

अप्रैल अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर **20 अप्रैल** तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) जून अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

इसमें 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

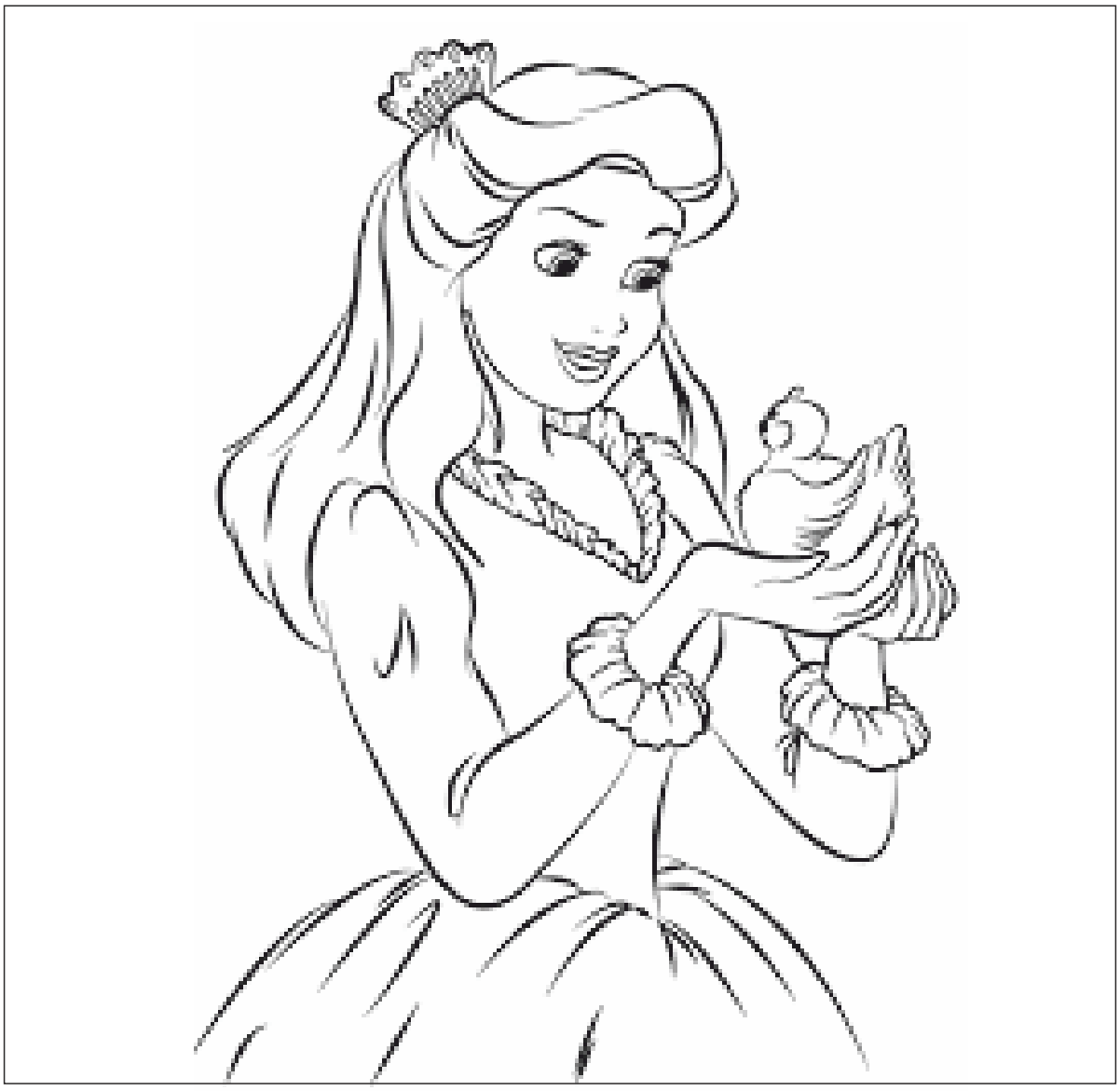

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

भटके हुए भूखे बन्दर को फलों के पास पहुँचाओ ?

प्रस्तुति : चाँद मोहम्मद घोसी

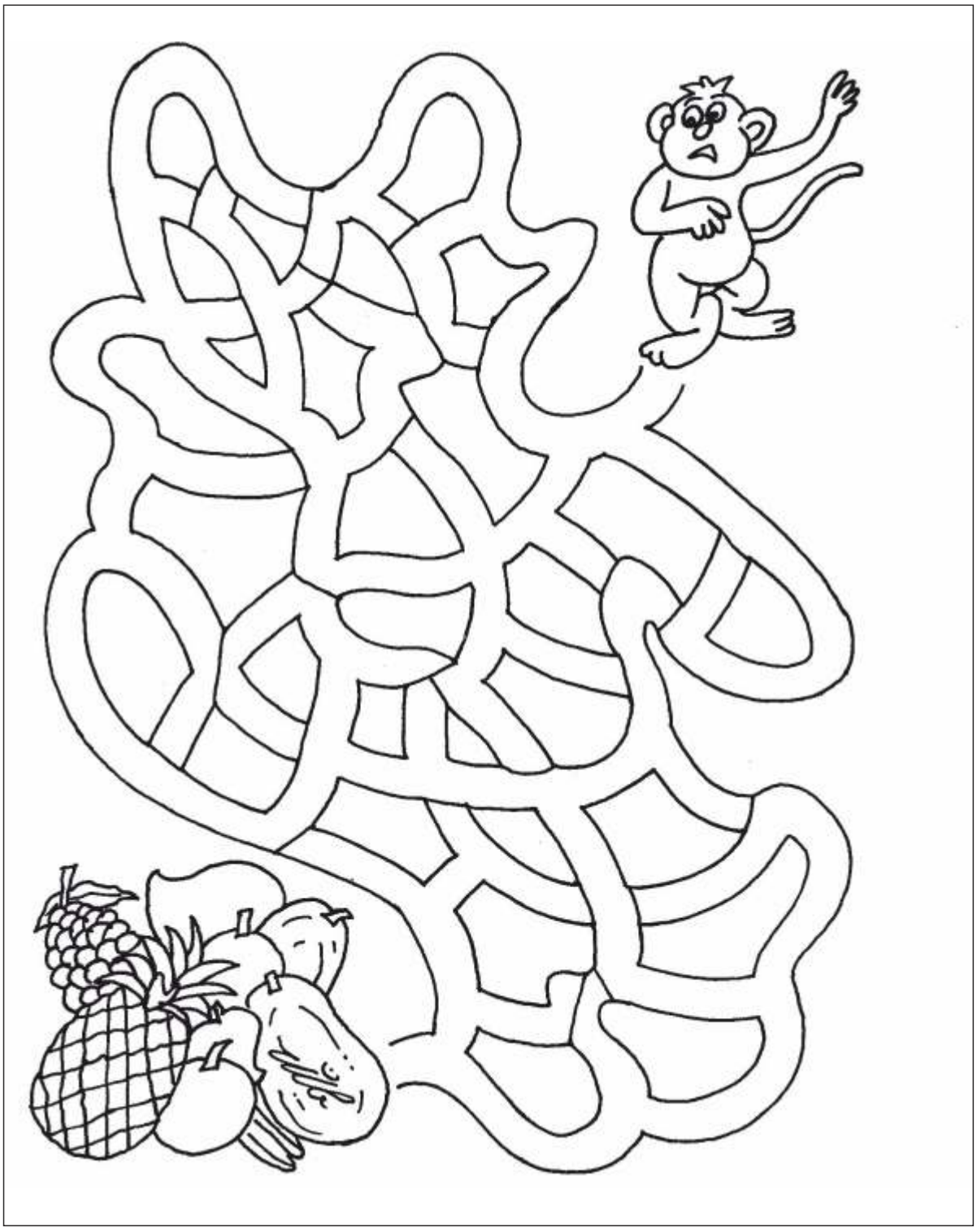

Service with Humility

SANT NIRANKARI CHARITABLE FOUNDATION

ANNOUNCES

NIRANKARI INSTITUTE OF

music and arts

Courses offered Dance, Vocal and Instrumental:

- Vocal (Classical)
- Vocal (Light)
- Harmonium
- Keyboard
- Guitar
- Tabla

Affiliated to

Prayag Sangeet Samiti, Allahabad

Sant Nirankari Public School, Nirankari Colony

Email: nvc@nirankarifoundation.org

Website: www.nirankarifoundation.org

Follow us:

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : : :
Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Licence No. U (DN)-23/2015-17
Licenced to post without Pre-payment

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message.
Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share your talent in form of painting, poetry & story

Posted at IMBC/1 Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)